हिन्दी पाक्षिक

सेमन्या कण्वघाटी

RNI No.: UTTHIN/2013/54659

वर्ष-13 अंक-24 हरिद्वार, रविवार, 01 नवम्बर, 2026 मूल्य-दो रूपया मात्र पृष्ठ-8

मुख्यमंत्री ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2026 का किया शुभारंभ

देहरादून । मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को मुख्यमंत्री आवास स्थित सभागार में आयोजित कार्यक्रम में उत्तराखण्ड पुलिस के नवीन ध्वज, प्रतीक चिह्न, फॉरमेशन साइन, इंसिग्निया, क्रेस्ट एवं सेरेमोनियल वर्दी का अनावरण किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने 'सत्यनिष्ठा से समृद्धि' थीम पर आधारित सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2026 का शुभारंभ भी किया। मुख्यमंत्री ने उपस्थित सभी लोगों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई। उन्होंने उत्तराखण्ड पुलिस सेवा से भारतीय पुलिस सेवा में प्रोन्नत हुई शाहजहां जावेद खान एवं जगदीश चंद्र को प्रतीक चिह्न अलंकरण कर पदोन्नति की शुभकामनाएं दीं।



मुख्यमंत्री ने उत्तराखण्ड पुलिस के अधिकारियों एवं जवानों को नवीन गौरव चिह्नों के अनावरण पर बधाई देते हुए कहा कि पुलिस की पहचान को नया स्वरूप प्रदान करना केवल प्रतीकों और वर्दी में बदलाव नहीं, बल्कि पुलिस बल की गौरवशाली परंपराओं, शौर्य, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा के मूल आदर्शों को और अधिक सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने कहा कि पुलिस के नए प्रतीक गौरव के साथ जिम्मेदारी का भी एहसास कराते हैं। इस नई पहचान का वास्तविक सम्मान तभी होगा, जब प्रत्येक नागरिक को पुलिस के व्यवहार में संवेदनशीलता, कार्यप्रणाली में दक्षता और कार्रवाई में निष्पक्षता दिखाई दे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में स्मार्ट पुलिसिंग की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में निरंतर कार्य किया जा रहा है। उत्तराखण्ड पुलिस को भी आधुनिक तकनीक से सुसज्जित, अधिक प्रशिक्षित, दक्ष एवं सक्षम बनाना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड पुलिस का नवीन ध्येय वाक्य 'कर्म सत्यं शौर्य' कर्तव्यनिष्ठा, सत्यनिष्ठा और साहस का संदेश देता है। पुलिस के प्रत्येक अधिकारी और जवान को इन आदर्शों को अपने आचरण एवं कार्यशैली में आत्मसात करना होगा। वर्दी का सम्मान आचरण से और जनता का विश्वास सेवा से मजबूत होता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर उत्तराखण्ड पुलिस के नवीन गौरव चिह्नों का अनावरण विशेष महत्व रखता है। भारत के प्रथम गृह मंत्री एवं राष्ट्रीय एकता के शिल्पकार सरदार वल्लभभाई पटेल ने देश की एकता, अखंडता और आंतरिक सुरक्षा को सुदृढ़ करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि यह अवसर राष्ट्रीय एकता, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्रसेवा के संकल्प को और अधिक मजबूत करने की प्रेरणा देता है। मुख्यमंत्री ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह के शुभारंभ पर कहा कि प्रदेश के विकास के साथ शासन व्यवस्था में ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना भी आवश्यक है। विकास का वास्तविक उद्देश्य तभी पूरा होगा, जब सरकारी संसाधनों का सही उपयोग हो और आमजन को बिना किसी परेशानी के सरकारी सेवाओं का लाभ मिले। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार भ्रष्टाचार के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस की नीति पर कार्य कर रही है। भ्रष्टाचारमुक्त शासन व्यवस्था सुनिश्चित करने में सतर्कता विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भ्रष्टाचार की शिकायतों पर कार्रवाई करने के साथ उन खामियों को भी दूर करना आवश्यक है, जिनके कारण भ्रष्टाचार की संभावनाएं पैदा होती हैं। उन्होंने प्रदेशवासियों से भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाने और किसी भी प्रकार की भ्रष्टाचार संबंधी शिकायत हेल्पलाइन नंबर 1064 पर दर्ज कराने का आह्वान किया। मुख्यमंत्री ने मुख्य सचिव को निर्देश दिए कि मुख्यमंत्री हेल्पलाइन की भांति भ्रष्टाचार संबंधी शिकायतों के लिए संचालित हेल्पलाइन नंबर 1064 की भी नियमित समीक्षा की जाए। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध शिकायत दर्ज कराने वाले प्रत्येक व्यक्ति की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए नियमानुसार कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

मुख्यमंत्री ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से कार्यालय आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की बात संवेदनशीलता से सुनने तथा उनके कार्यों का समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने का आग्रह किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें उत्तराखण्ड में ऐसी भ्रष्टाचारमुक्त व्यवस्था का निर्माण करना है, जहां प्रत्येक नागरिक को सम्मान मिले, जनसेवाओं में किसी प्रकार की लापरवाही न हो और जनता तथा शासन-प्रशासन के बीच विश्वास निरंतर मजबूत होता रहे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह प्रदेश के लिए अत्यंत गौरव का विषय है कि आगामी 6 नवंबर को केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह द्वारा उत्तराखण्ड पुलिस को प्रतिष्ठित 'राष्ट्रपति पुलिस कलर' से अलंकृत किया जाएगा। इस अवसर पर उत्तराखण्ड पुलिस के जवान नवीन सेरेमोनियल वर्दी में परेड में प्रतिभाग करेंगे। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि उत्तराखण्ड पुलिस अपनी नवीन पहचान के साथ जनसेवा, अनुशासन, दक्षता और कर्तव्यनिष्ठा के नए मानक स्थापित करेगी।

उत्तराखण्ड पुलिस के गौरव चिह्नों को मिला नया स्वरूप

उत्तराखण्ड पुलिस के नवीन प्रतीक चिह्न में अशोक स्तंभ, 'सत्यमेव जयते', स्वर्णिम लॉरेल रीथ, हिमालय एवं नदी को समाहित किया गया है, जो राष्ट्रीय गौरव, सत्य, न्याय, उत्कृष्टता और उत्तराखण्ड की विशिष्ट भौगोलिक पहचान को दर्शाते हैं। पूर्व प्रचलित तीन रंगों वाले क्षैतिज पुलिस ध्वज के स्थान पर गहरे नीले रंग की पृष्ठभूमि वाला नवीन ध्वज अपनाया गया है, जिसके मध्य नया पुलिस प्रतीक चिह्न तथा लाल एवं स्वर्णिम किनारे शामिल हैं।

पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों की वर्दी पर प्रयुक्त होने वाले फॉरमेशन साइन, इंसिग्निया और क्रेस्ट को भी नवीन प्रतीक चिह्न के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया गया है। इसके साथ ही पारंपरिक खाकी परिधान में बहुरंगी सेरेमोनियल सैश, अलंकरण एवं विशिष्ट परेड संबंधी साज-सज्जा को शामिल करते हुए सेरेमोनियल वर्दी को नया स्वरूप दिया गया है।

उत्तराखण्ड पुलिस के ध्वज का अनावरण पूर्व में 4 अप्रैल 2008 को हुआ था। बदलती चुनौतियों और पुलिस बल के बढ़ते दायित्वों के अनुरूप नवीन गौरव चिह्नों एवं प्रतीकों को तैयार किया गया है। पुलिस मुख्यालय से प्राप्त विवरण के अनुसार मुख्यमंत्री द्वारा 21 अक्टूबर 2026 को नवीन स्वरूप को अनुमोदन प्रदान किया गया था।

राज्यपाल ने हरिद्वार में किया 52वें अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन का उद्घाटन



हरिद्वार । राज्यपाल डॉ. ढाल सिंह बिसेन ने गुरुवार को हरिद्वार स्थित पतंजलि विश्वविद्यालय में 52वें अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन का उद्घाटन किया। तीन दिवसीय इस सम्मेलन में देश एवं विदेश से अनके विद्वान, शोधकर्ता, शिक्षाविद तथा विद्यार्थी प्रतिभाग कर रहे हैं। उद्घाटन सत्र में अपने संबोधन में राज्यपाल ने कहा कि भारतीय ज्ञान-परम्परा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र, समाज में सद्भाव और मानव कल्याण की भावना को मजबूत करना भी है।

राज्यपाल ने कहा कि प्राच्यविद्या का अध्ययन केवल अतीत को जानने तक सीमित नहीं है। यह भारतीय सभ्यता के विकास, विभिन्न विचारधाराओं के संवाद और मानव समाज के बौद्धिक इतिहास को समझने का अवसर प्रदान करता है। उन्होनें कहा कि वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत और भारतीय दर्शन के ग्रंथों में जीवन, नैतिकता, कर्तव्य और सामाजिक समरसता से जुड़े महत्वपूर्ण विचार मिलते हैं। राज्यपाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय सांस्कृतिक विरासत, प्राचीन ज्ञान-परम्परा और भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन को महत्व दिया जा रहा है। 'विकास भी, विरासत भी' का विचार आधुनिक प्रगति और सांस्कृतिक जड़ों के बीच समन्वय को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी भारतीय ज्ञान-परम्परा, मातृभाषाओं, बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान को महत्व दिया गया है। राज्यपाल ने कहा कि ज्ञान भारतम् मिशन के माध्यम से प्राचीन पांडुलिपियों के सर्वेक्षण, संरक्षण और अंकीयकरण की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। इन पांडुलिपियों में भारत की सभ्यता और बौद्धिक उपलब्धियों का अमूल्य भंडार है। इनके संरक्षण के साथ भावी पीढ़ियों तक ज्ञान पहुंचाना हम सभी की जिम्मेदारी है।

राज्यपाल ने कहा कि युवा शोधार्थियों को प्राचीन ग्रंथों के मूल पाठ, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि शोध में स्रोतों की प्रामाणिकता, निष्कर्षों की पारदर्शिता और बौद्धिक ईमानदारी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस अवसर पर राज्यपाल ने विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रकाशनों का लोकार्पण भी किया। राज्यपाल ने कहा कि हमारी प्राचीन परम्परा में ज्ञान को लोककल्याण से जोड़ने की भावना रही है। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः'' का मंगलभाव हमें स्मरण कराता है कि ज्ञान का सर्वोच्च उद्देश्य सम्पूर्ण मानवता के सुख, स्वास्थ्य और कल्याण में योगदान देना है। आज जब विश्व अनेक सामाजिक, पर्यावरणीय और नैतिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब भारतीय ज्ञान-परम्परा में निहित संतुलन, सह-अस्तित्व और समग्र दृष्टि पर इस प्रकार के विमर्श उपयोगी हो सकते हैं। इस सम्मेलन में पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्वामी रामदेव, कुलपति आचार्य बालकृष्ण जी, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी सहित भारतीय विद्वत् परिषद्, विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, विद्वान, आचार्य, शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर पुलिस लाइन में भव्य परेड, 16 पुलिसकर्मी सम्मानित

हरिद्वार । राष्ट्रीय एकता दिवस पर पुलिस लाइन रोशनाबाद में परेड का आयोजन किया गया। आईजी विम्मी सचदेवा ने परेड की सलामी ली। इस दौरान उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 16 पुलिसकर्मियों को पुलिस महानिदेशक प्रशस्ति डिस्क और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। शनिवार को आयोजित परेड में पुलिस बल ने अनुशासन और एकजुटता का परिचय दिया। इसके बाद आईजी विम्मी सचदेवा ने पुलिसकर्मियों को राष्ट्रीय एकता दिवस की महत्ता बताई। उन्होंने राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा बनाए रखने के लिए पूरी निष्ठा और समर्पण से काम करने का संदेश दिया। जिले के सभी थानों और कार्यालयों में भी पुलिसकर्मियों ने राष्ट्रीय एकता की शपथ ली। इसके बाद आईजी ने पुलिस लाइन परिसर का निरीक्षण किया। उन्होंने पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ सम्मेलन कर जरूरी दिशा-निर्देश दिए। सम्मेलन में एसएसपी नवनीत सिंह, एसपी क्राइम एवं ट्रैफिक निशा यादव, एसपी ग्रामीण अभय प्रताप सिंह और एसपी सिटी दीपक सिंह आदि मौजूद रहे।

यह हुए सम्मानित- कार्यक्रम में सीओ ज्वालापुर संजय चौहान, सीओ सिटी शिशुपाल सिंह नेगी, एसएचओ गोविंद कुमार, एसएचओ शहजाद अली, एसआई सुधांशु कौशिक, एसआई सोनू कुमार, हेड कांस्टेबल मंगल सिंह, नरेंद्र नेगी, मुकेश कुमार, अंकित रावत, राकेश कुमार, हर्ष उनियाल, आरक्षी नितिन कुमार, मोहम्मद आबिद, आरक्षी चालक अर्जुन सिंह और दीपक चंद को सम्मानित किया गया।

सम्पादकीय

वैकल्पिक मॉडल की जरुरत

विचार है? ध्यान रहे 'रिजीम चेंज' अब किसी फ्रींज एलीमेंट की कही गई बात भर नहीं है। प्रशांत भूषण ने जब यह बात कही थी तब यह माना गया था कि वे भाजपा विरोधी सिविल सोसायटी का प्रतिनिधि चेहरा हैं लेकिन वे मुख्यधारा की राजनीति से नहीं जुड़े हैं इसलिए उनकी बात को विपक्ष का आइडिया नहीं मानना चाहिए। लेकिन अब धीरे धीरे विपक्ष की पार्टियां इसको अपना आइडिया बना रही हैं। मुंबई के शिवाजी पार्क में अपनी शिव सेना की सालाना रैली में उद्धव ठाकरे ने बहुत जोर देकर कहा कि 'हां, रिजीम चेंज करना ही उद्देश्य है'। इसी तरह उतने ही जोरदार अंदाज में आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने कहा कि 'कोई लाग लपेट नहीं है, रिजीम चेंज करना है'। कांग्रेस ने जरूर इस तरह की बात नहीं कही है लेकिन मुख्यधारा की राजनीतिक पार्टियां अब खुल कर 'रिजीम चेंज' की बात कर रही हैं। इसलिए यह सवाल है कि उनके पास क्या वैकल्पिक विचार हैं? जिन मुद्दों को लेकर प्रदर्शन हो रहे हैं उन मुद्दों पर ही क्या उन्होंने अपना वैकल्पिक मॉडल पेश किया है? क्या उन्होंने बताया है कि अगर 'रिजीम चेंज' करने में कामयाबी मिल जाती है और उनका 'रिजीम' आ जाता है तो वे इन मुद्दों पर क्या करेंगे? हालांकि हर बार यह जरूरी नहीं होता है कि सत्ता का विरोध करने वाली पार्टियां या संगठन अपना वैकल्पिक मॉडल पेश करें। भारत में तो खासतौर से ऐसा नहीं होता है। जनता जब सरकारों का विरोध करती है तो यह नहीं देखती है कि अगर इनको हटा दिया तो कौन आएगा। यह एक गलत धारणा है कि कोई अच्छा विकल्प नहीं है इसलिए लोग नरेंद्र मोदी को चुन रहे हैं। अच्छा विकल्प तो अटल बिहारी वाजपेयी के मुकाबले भी नहीं था लेकिन लोगों ने उनको हरा दिया था। नरसिंह राव के मुकाबले भी अच्छा विकल्प नहीं था और इमरजेंसी के समय हुए चुनाव में इंदिरा गांधी के मुकाबले तो कोई विकल्प ही नहीं था। फिर भी लोगों ने कांग्रेस और इंदिरा गांधी दोनों को हराया। राजीव गांधी को भी वीपी सिंह के नेतृत्व वाले जनता दल ने हराया तो ऐसा नहीं था कि वीपी सिंह ने शासन और राजकाज का कोई वैकल्पिक मॉडल पेश किया था। नरेंद्र मोदी भी 2014 में जीते तो एक बहुत अस्पष्ट सा गुजरात मॉडल पेश किया गया था। लेकिन जिन मसलों पर जनता नाराज थी, हर उस मसले पर कोई वैकल्पिक विचार या मॉडल नहीं पेश किया गया था। कहने का मतलब है कि चुनाव लोकप्रिय धारणा, आम मतदाता के गुस्से और लोक लुभावन नारों पर जीता जाता है। इसलिए कह सकते हैं कि अभी सिर्फ 'रिजीम चेंज' की बात हो और किसी वैकल्पिक मॉडल की बात नहीं करनी चाहिए। इसके बावजूद वैकल्पिक मॉडल की जरुरत बताई जा रही है तो उसका कारण यह है कि पहले के मुकाबले समय बहुत बदल गया है। जिस 'जेन जी' की नाराजगी को दिशा देकर विपक्ष चुनाव जीतने की उम्मीद कर रहा है वह अपने भविष्य को लेकर निराश है तो उसे अपने साथ लाने के लिए आशा की किरण दिखानी होगी। उसे बताना होगा कि अगर वह अपनी नाराजगी और निराशा को वोट के जरिए प्रकट करता है तो उसके बदले में क्या मिलेगा। अगर देश का युवा और छात्र पेपर लीक और परीक्षा में गड़बड़ी से परेशान हैं तो विपक्ष की सरकार आने पर इन मामलों में क्या किया जाएगा यह युवाओं व छात्रों को बताना होगा। विपक्ष के पास उन गड़बड़ियों को दूर करने का क्या उपाय है और वह अभी की सरकार द्वारा किए जा रहे उपायों से कैसे भिन्न है, यह भी बताना होगा। मौजूदा सरकार ने नंदन नीलेकणी की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई है, जिसकी संभावित सिफारिशों के बारे में खबरें आने लगी हैं। विपक्ष के उपाय क्या उससे भिन्न होंगे? इसी तरह अगर इस समय देश गहरे आर्थिक संकट में फंसा दिख रहा है, जिसके वैश्विक और घरेलू दोनों कारण हैं तो उस संकट से निकालने का विपक्ष के पास क्या फॉर्मूला है? कैसे भारत में निवेश बढ़ेगा, विदेशी निवेशकों का शेयर बाजार से पैसा निकालना कैसे रूकेगा, रुपए की गिरावट कैसे थमेगी, रोजगार कैसे बढ़ेगा, लोगों की आय कैसे बढ़ेगी, क्या इसका कोई प्लान विपक्ष के पास है? विपक्ष के नेता मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति के लिए बनाए गए कानून का विरोध कर रहे हैं। सवाल है कि अगर विपक्ष की सरकार आ गई तो वह कैसे नियुक्ति करेगी? पहले जैसे सीधे सरकार नियुक्ति करती थी वह मॉडल लौटेगा या तीन लोगों के नियुक्ति पैनल में सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस को शामिल किया जाएगा? यह भी बताना चाहिए। ऐसे ही मतदाता सूची में से अगर मृत या स्थायी रूप से शिफ्टेड या डुप्लीकेट वोटर्स के नाम हटाने हैं तो विपक्ष उसका क्या तरीका अपनाएगा? ऐसे अनेक सवाल है, जिन पर विपक्ष को अपना वैकल्पिक विचार प्रस्तुत करना चाहिए। यह सही है कि भारत में ऐसा नहीं होता है और किसी नेता के बारे में बनी लोकप्रिय धारणा के आधार पर ही लोग उसको वोट करते हैं। लेकिन पश्चिम के अनेक सभ्य और लोकतांत्रिक देशों में विपक्ष अपना विजन जनता के सामने रखता है। जनता सत्तापक्ष और विपक्ष के विजन का तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद वोट करने का फैसला करती है। भारत में विपक्ष को इस तरह का कोई काम करना चाहिए। ध्यान रहे विजन सिर्फ विचारधारात्मक नहीं होना चाहिए। राहुल गांधी विचारधारात्मक अंतर तो बता रहे हैं। वे अपने आइडिया ऑफ इंडिया को भाजपा, आरएसएस व नरेंद्र मोदी के आइडिया ऑफ इंडिया से बेहतर बता रहे हैं। लेकिन इससे आगे आम आदमी के जीवन से जुड़ी बुनियादी बातों पर भी अपना विजन बताना होगा। अगर विपक्ष ऐसा नहीं करता है तो माना जाएगा कि वह अपने लिए सकारात्मक वोट की बजाय सरकार के खिलाफ नकारात्मक वोट के भरोसे चुनाव मैदान में उतरने की तैयारी कर रहा है।

भारत के बिस्मार्क का सपना अभी अधूरा

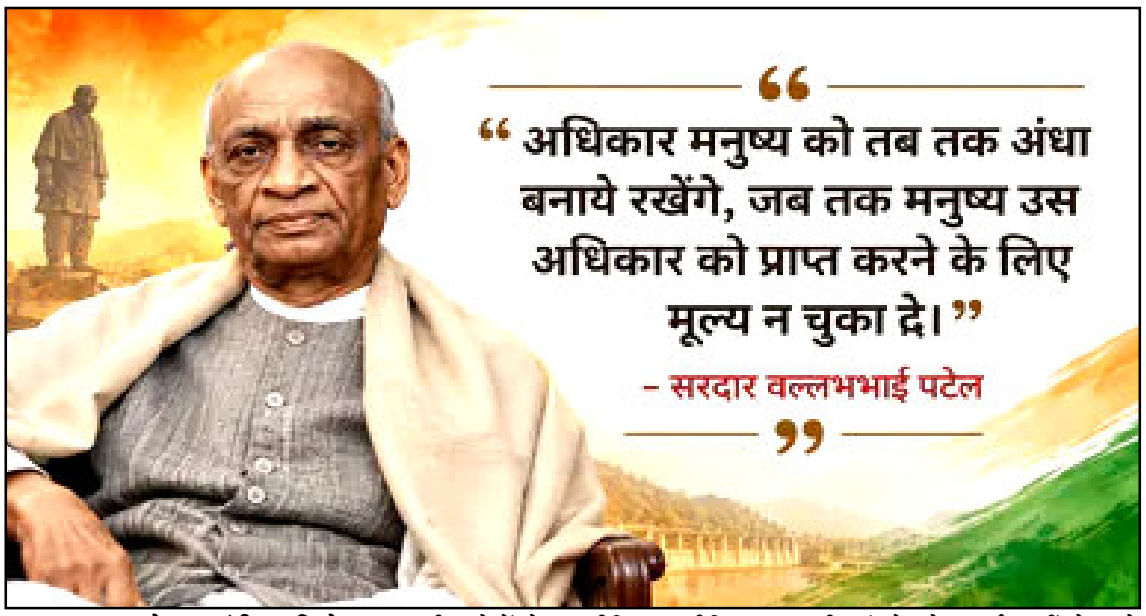

सरदार पटेल जयंती पर विशेष:

डॉ घनश्याम बादल

कुछ लोग समय की धारा के साथ बहते हैं और कुछ उसकी दिशा बदल देते हैं। सरदार वल्लभभाई पटेल दूसरी श्रेणी के नेता थे। भारत आज़ादी के बाद एक बड़ी चुनौती जिस चुनौती से रूबरू हुआ वह थी एक बिखरे हुए सामंतवादी देश को एक राष्ट्र बनाना, जो सैकड़ों रियासतों और परस्पर विरोधी आकांक्षाओं में बंटा हुआ था। अंग्रेज अपने पीछे ऐसा राजनीतिक बारूद छोड़ गए थे, जिसकी चिंगारी देश को टुकड़ों में बांट सकती थी। इस बारूद को निष्क्रिय करने का कठिन काम पटेल ने किया। उनकी जयंती केवल उन्हें याद करने का दिन नहीं, बल्कि यह जांचने का भी दिन है कि हम उनके बनाए भारत को कितना समझ पाए हैं। 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद में जन्मे वल्लभभाई पटेल महात्मा गांधी के संपर्क में आने के बाद वे स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। खेड़ा के किसान आंदोलन और 1928 के बारडोली सत्याग्रह ने उनके नेतृत्व की असली ताकत दिखाई। कर न चुका पाने वाले किसानों के साथ खड़े होकर उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत को चुनौती दी। बारडोली के संघर्ष ने उन्हें 'सरदार' बनाया। पटेल का व्यक्तित्व गांधीजी की नैतिक शक्ति से प्रभावित तो था, लेकिन उनकी कार्यशैली में व्यावहारिकता और कठोर निर्णय क्षमता का विशेष स्थान था। वे जानते थे कि राजनीति में संगठन, अनुशासन, समय पर निर्णय और परिणाम हासिल करने की क्षमता चाहिए। वे उन नेताओं में थे जो आंदोलन की आग में भी तपे थे और प्रशासन की कठिन जमीन पर उतरना भी जानते थे।

भारत के बिस्मार्क

जर्मनी के एकीकरण में निर्णायक भूमिका निभाने वाले प्रशियाई राजनेता ऑटो फॉन बिस्मार्क को इतिहास में 'जर्मन एकीकरण का शिल्पकार' कहा जाता है। उन्होंने अनेक स्वतंत्र जर्मन राज्यों को एक राजनीतिक राष्ट्र के रूप में संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सरदार पटेल ने भी स्वतंत्रता के समय बिखरी हुई भारतीय रियासतों को भारतीय संघ में शामिल कराने का असाधारण कार्य किया। इसी ऐतिहासिक समानता के कारण पटेल को 'भारत का बिस्मार्क' कहा जाता है। यह तुलना केवल दो नेताओं की दृढ़ता तक सीमित नहीं है। दोनों के सामने बिखरे राजनीतिक भूगोल को एक केंद्रीय सत्ता के अधीन संगठित करने की चुनौती थी। दोनों ने कूटनीति, राजनीतिक दबाव और परिस्थितियों के अनुरूप कठोर कदमों का सहारा लिया। अंतर यह था कि बिस्मार्क ने जर्मनी का एकीकरण प्रशिया के नेतृत्व में युद्धों और शक्ति-राजनीति के माध्यम से आगे बढ़ाया, जबकि पटेल को विभाजन की त्रासदी, सांप्रदायिक तनाव, ब्रिटिश सत्ता की वापसी और सैकड़ों रियासतों की जटिलताओं के बीच लोकतांत्रिक भारत का निर्माण करना था। इसलिए यह उपाधि पटेल की ऐतिहासिक भूमिका को समझने का उपयोगी माध्यम है, 1947 में देश के पहले उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री बने पटेल के सामने सबसे बड़ा प्रश्न था— बिखरी हुई 562 रियासतों का भारत में विलय करना।पटेल ने वी. पी. मेनन के साथ मिलकर इस चुनौती का सामना किया। अधिकांश रियासतों को बातचीत और विलय-पत्रों के माध्यम से भारत में शामिल कराया गया। जूनागढ़ में राजनीतिक दबाव और बाद में जनमत-संग्रह कराया वहीं हैदराबाद के निजाम के साथ बातचीत विफल होने पर सितंबर 1948 में सैन्य कार्रवाई की, जिसे उस समय 'पुलिस कार्रवाई' कहा गया। जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय भी इसी दौर का महत्वपूर्ण घटनाक्रम था, इस ऐतिहासिक अभियान ने भारत को ऐसे संभावित विखंडन से बचाने में निर्णायक योगदान दिया ।पटेल की विशिष्टता इस बात में थी कि उन्होंने इस जटिल प्रक्रिया में समय गंवाने के बजाय निर्णय लिए और राष्ट्रीय एकता के प्रश्न पर असाधारण दृढ़ता दिखाई।

उनकी उपलब्धियां रियासतों के विलय तक सीमित नहीं थीं। विभाजन के बाद शरणार्थियों का पुनर्वास, सांप्रदायिक हिंसा पर नियंत्रण और आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियां भी सामने थीं। भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा जैसी अखिल भारतीय सेवाओं को बनाए रखने की उनकी वकालत का उद्देश्य एक ऐसा प्रशासनिक ढांचा तैयार करना था, जो राज्यों की सीमाओं से परे राष्ट्रीय एकता और शासन की निरंतरता को मजबूती दे। उन्हें मालूम था कि नक्शे पर सीमाएं जोड़ देना पर्याप्त नहीं; देश को चलाने वाली संस्थाएं भी मजबूत होनी चाहिए।

पटेल को याद करने का मतलब

आज सरदार पटेल की तस्वीर लगभग हर राजनीतिक मंच पर दिखाई दे सकती है। उनकी विशाल प्रतिमा देश के गौरव का प्रतीक है, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या उनके विचार भी हमारे सार्वजनिक जीवन में उतनी ही ऊंचाई प्राप्त कर पाए हैं? महापुरुषों को अपने पक्ष में खड़ा दिखाना राजनीति का आसान तरीका है; उनके सिद्धांतों के अनुसार अपने आचरण को बदलना कठिन काम है। पटेल की राष्ट्रीय एकता की कल्पना को केवल शक्तिशाली केंद्र या कठोर प्रशासन तक सीमित नहीं किया जा सकता। एकता का अर्थ यह भी है कि भाषा, धर्म, जाति और क्षेत्र के आधार पर नागरिकों के बीच स्थायी दीवारें खड़ी न हों। राजनीतिक मतभेद लोकतंत्र की स्वाभाविक विशेषता हैं, लेकिन जब विरोधी को देश का शत्रु और असहमति को अपराध मानने की प्रवृत्ति बढ़ती है, तब राष्ट्र की सामाजिक नींव कमजोर होती है। पटेल की विरासत का सम्मान करने वालों को यह समझना होगा कि देश को जोड़ने का काम केवल सीमाओं पर नहीं, समाज के भीतर भी करना पड़ता है। उनकी प्रशासनिक दृष्टि आज भी प्रासंगिक है। शासन में अनुशासन हो, संस्थाएं सक्षम हों, निर्णय समय पर लिए जाएं और अधिकारी राजनीतिक दबाव के बजाय कानून तथा जनहित के प्रति जवाबदेह रहें, ये वे कसौटियां हैं जिन पर आधुनिक भारत को भी खरा उतरना चाहिए। दृढ़ता का अर्थ मनमानी नहीं और राष्ट्रीय एकता का अर्थ विचारों की एकरूपता नहीं है।

सरदार पटेल ने अपने समय में राजनीतिक बिखराव के सामने खड़े होकर भारत की एकता को आकार दिया था। आज चुनौती उस एकता को भीतर से मजबूत करने की है। आज राजनीतिक नेतृत्व को समझना होगा कि उसका भविष्य जनता के विश्वास, लोकतांत्रिक मर्यादा और सामाजिक सद्भाव से जुड़ा है। पटेल की जयंती पर सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या हम अखंड भारत को केवल राजनीतिक नक्शे पर अखंड रखना चाहते हैं, या उसके नागरिकों के मन में भी एकता बचाए रखना चाहते हैं? सरदार पटेल को सच्ची श्रद्धांजलि इसी प्रश्न का ईमानदार उत्तर देने में है।

कुंभ-2027: शिविर स्थलों से घाटों और संपर्क मार्गों तक तैयारियों को गति देने पर जोर



हरिद्वार । कुंभ मेला-2027 के आयोजन को सुव्यवस्थित, सुरक्षित और सुविधाजनक बनाने के लिए मेला प्रशासन द्वारा शिविर स्थलों से लेकर घाटों, पुलों और संपर्क मार्गों तक आवश्यक व्यवस्थाओं को समयबद्ध ढंग से विकसित किया जा रहा है। इसी क्रम में मेलाधिकारी श्रीमती सोनिका ने शुक्रवार को बैरागी कैंप, नया टापू, सती द्वीप और दक्ष द्वीप सहित कनखल क्षेत्र का विस्तृत स्थलीय निरीक्षण किया। उन्होंने विभिन्न शिविर स्थलों पर चल रहे अस्थायी कार्यों, घाटों के निर्माण एवं मरम्मत तथा आवागमन से जुड़ी परियोजनाओं की प्रगति का जायजा लेते हुए अधिकारियों को सभी कार्य गुणवत्ता के साथ निर्धारित समयसीमा में पूरा करने के निर्देश दिए।

मेलाधिकारी ने बैरागी कैंप, सेक्टर-12 स्थित नया टापू, सती द्वीप एवं दक्ष द्वीप क्षेत्रों का भ्रमण कर कुंभ शिविरों के लिए की जा रही तैयारियों की जानकारी ली। उन्होंने शिविर स्थलों पर भूमि की सफाई, समतलीकरण एवं ड्रेसिंग के कार्यों की प्रगति देखने के साथ ही अस्थायी संपर्क मार्गों, बिजली और पेयजल आपूर्ति तथा सेक्टर प्लान के अनुरूप विकसित की जा रही अन्य आवश्यक सुविधाओं की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि सभी सेक्टरों में श्रद्धालुओं की सुगम आवाजाही, सुरक्षा और सुविधा को प्राथमिकता देते हुए आधारभूत व्यवस्थाएं समय से पूरी की जाएं। सेक्टर-12 के नया टापू तक पहुंचने वाले संपर्क मार्ग को बेहतर बनाने और मार्ग पर आवागमन की सुरक्षा के लिए आवश्यक उपाय सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए।

पुलों के निर्माण में तेजी लाने के निर्देश: कुंभ मेला की मद से सतीघाट से बैरागी कैंप को जोड़ने के लिए 48 मीटर लंबे पैदल पुल का निर्माण किया जा रहा है। मेलाधिकारी ने इस निर्माण कार्य का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए इसे शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने दक्ष द्वीप एवं बैरागी कैंप को जोड़ने के लिए निर्माणाधीन 60 मीटर स्पान के स्टील गर्डर डबल लेन पुल की प्रगति भी देखी और कार्य में तेजी लाने को कहा। इसके अतिरिक्त दरिद्रभंजन महादेव मंदिर के समीप मायापुर स्कैप चैनल पर प्रस्तावित बैली ब्रिज के स्थल का निरीक्षण करते हुए मेलाधिकारी ने निर्माण कार्य तत्काल प्रारंभ कराने के निर्देश दिए। उन्होंने इस पुल से कनखल क्षेत्र को जोड़ने वाली सड़क पर दरिद्रभंजन मंदिर और श्मशान घाट के प्रवेश द्वार के बीच स्थित संकरे हिस्से को चौड़ा करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। इसके लिए संबंधित भूस्वामियों से वार्ता कर आवश्यक भूमि उपलब्ध कराने की कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

घाटों की मरम्मत, सफाई और सुरक्षा पर विशेष ध्यान : मेलाधिकारी ने बैरागी कैंप क्षेत्र में स्कैप चैनल पर निर्माणाधीन 260 मीटर लंबे घाट के कार्यों का जायजा लिया। इसके बाद उन्होंने कनखल क्षेत्र के विभिन्न सार्वजनिक घाटों का निरीक्षण कर उनकी स्थिति का आकलन किया। उन्होंने संबंधित विभागों को सभी घाटों की आवश्यक मरम्मत कराने के साथ ही स्नानार्थियों की सुरक्षा के लिए रेलिंग एवं चेन लगाने के निर्देश दिए।उन्होंने कहा कि स्कैप चैनल की बंदी की अवधि का उपयोग घाटों की समुचित सफाई और आवश्यक मरम्मत के लिए किया जाए। घाटों के बेहतर रखरखाव, सौंदर्यीकरण और नियमित सफाई की प्रभावी व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि कुंभ के दौरान श्रद्धालुओं को स्वच्छ एवं सुरक्षित स्नान की सुविधा उपलब्ध हो सके।

श्मशान घाट की सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण पर जोर : मेलाधिकारी ने कनखल स्थित दक्ष मंदिर, शीतला माता मंदिर एवं दरिद्रभंजन मंदिर का भ्रमण कर क्षेत्र की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। साथ ही कनखल श्मशान घाट क्षेत्र में कुंभ मेला की मद से कराए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने श्मशान घाट की अवस्थापना सुविधाओं को सुदृढ़ करने के साथ ही प्रकाश व्यवस्था, पेयजल आपूर्ति, शौचालय निर्माण और जनसुविधाओं से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता से पूरा करने के निर्देश दिए।

भ्रमण के दौरान मेलाधिकारी ने स्थानीय नागरिकों से भी भेंटकर मेला की व्यवस्थाओं और कार्यों के संबंध में उनके फीडबैक और सुझाव प्राप्त किये।

मेलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि कुंभ से संबंधित सभी निर्माण एवं व्यवस्थागत कार्यों की नियमित निगरानी की जाए। कार्यों में गुणवत्ता और समयबद्धता के साथ ही संबंधित क्षेत्रों की आवश्यकता एवं उपयोगिता का भी विशेष ध्यान रखा जाए, ताकि कुंभ के दौरान श्रद्धालुओं और स्थानीय नागरिकों को बेहतर सुविधाएं मिल सकें।

निरीक्षण के दौरान उप मेलाधिकारी मंजीत सिंह, सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता अनुभव नौटियाल, पेयजल निगम के अधिशासी अभियंता राजेश गुप्ता सहित ग्रामीण निर्माण विभाग, लोक निर्माण विभाग, पीआईयू, यूपीसीएल एवं अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

सनातन संस्कृति के संवाहक हैं स्वामी करौली शंकर महाराज : दुर्गेशानंद

हरिद्वार । दक्षेश्वर महादेव मंदिर से निकाली जा रही महामंडलेश्वर स्वामी करौली शंकर महाराज की दंडवत यात्रा का शुक्रवार को कनखल स्थित श्री मानव कल्याण आश्रम में स्वागत किया गया। संतों और श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर यात्रा में शामिल भक्तों का अभिनंदन किया। महंत स्वामी दुर्गेशानंद सरस्वती ने कहा कि स्वामी करौली शंकर महाराज सनातन संस्कृति के सच्चे संवाहक हैं। उनके नेतृत्व में तीर्थनगरी में हजारों साधक मंत्र साधना और तपस्या कर रहे हैं। दंडवत यात्रा में देश-विदेश से श्रद्धालुओं का उमड़ता जनसमूह अनूठी पहल है। जिस तरह कांवड़ यात्रा में शिवभक्तों का सैलाब उमड़ता है, उसी तरह दंडवत यात्रा में श्रद्धालु निरंतर ईश्वर का स्मरण करते हुए गुरु के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट कर रहे हैं। यह यात्रा राष्ट्रीय एकता का संदेश भी दे रही है। संस्था के मैनेजिंग ट्रस्टी अनिरुद्ध भाटी ने कहा कि स्वामी करौली शंकर महाराज देश-दुनिया में सनातन संस्कृति का प्रचार कर रहे हैं। मंत्र साधना, योग और सत्संग के माध्यम से मानव कल्याण का संदेश दिया जा रहा है। यात्रा के साथ गंगा सेवा और स्वच्छता का संदेश भी दिया जा रहा है। स्वामी हंसानंद सरस्वती ने कहा कि दंडवत यात्रा के साथ गंगा स्वच्छता अभियान को जोड़कर गंगा के प्रति श्रद्धा और समर्पण का संदेश दिया जा रहा है। इस दौरान ललिताम्बा देवी वेद विद्यालय के विद्यार्थियों ने स्वस्तिवाचन किया। आश्रम प्रबंधन और कार्यकर्ताओं ने श्रद्धालुओं पर पुष्पवर्षा कर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर आश्रम प्रबंधक एसके मिश्रा, संजय वर्मा, पवन सेमवाल, मिथिलेश मिश्रा, महेंद्र चौधरी सहित अनेक श्रद्धालु मौजूद रहे।

जीआरपी ने रन फॉर यूनिटी का आयोजन कर राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई

हरिद्वार । लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती एवं राष्ट्रीय एकता दिवस पर शनिवार को जीआरपी उत्तराखंड की तरफ से रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया गया। इस दौरान जीआरपी के सभी थानों में तैनात अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साह के साथ एकता दौड़ में प्रतिभाग किया। दौड़ के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, अखंडता और आपसी सद्भाव का संदेश दिया गया। जीआरपी पुलिस लाइन में आयोजित कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक अरुणा भारती ने अधिकारियों और कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाई। सभी ने देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा बनाए रखने के साथ राष्ट्र की एकता को मजबूत करने का संकल्प लिया।कर्मचारियों ने सरदार वल्लभभाई पटेल के आदर्शों पर चलने और देश की एकता एवं अखंडता के लिए सदैव समर्पित रहने की शपथ भी ली। इस मौके पर सरदार पटेल के राष्ट्र निर्माण में दिए गए योगदान को याद किया गया। अधिकारियों ने उनके आदर्शों को जीवन में अपनाने और राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने का आह्वान सभी कर्मचारियों से किया।

महिला कर्मचारियों से अभद्रता के मामले में सुपरवाइजर पर मुकदमा दर्ज

देहरादून । पीपीपी मोड पर संचालित एक अस्पताल में महिला कर्मचारियों से अभद्रता और छेड़खानी के आरोप में पुलिस ने सुपरवाइजर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। अस्पताल में संविदा पर कार्यरत एक महिला कर्मचारी ने आरोपी के खिलाफ ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराई थी। पुलिस की जांच में आरोपी का आपराधिक इतिहास भी सामने आया था। आरोपी हरिद्वार की एक कोतवाली का हिस्ट्रीशीटर है। पुलिस ने मामले में केस दर्ज कर जांच शुरू कट दी है। पुलिस के अनुसार, महिला कर्मचारी ने शिकायत में आरोप लगाया था कि सुपरवाइजर शराब के नशे में कई महिला कर्मचारियों के साथ गाली-गलौज और अभद्र व्यवहार करता है। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू की थी। प्रारंभिक जांच में आरोपी के खिलाफ अलग-अलग थानों में कई मुकदमे दर्ज होने की जानकारी मिली। इसके अलावा वह एक कोतवाली में हिस्ट्रीशीटर भी है। आरोपी का आपराधिक रिकॉर्ड सामने आने के बाद अस्पताल में उसकी नियुक्ति को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। वहीं एसएचओ कुंदन सिंह राणा ने बताया कि महिला कर्मचारी की शिकायत के आधार पर आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। मामले में नियमानुसार कार्रवाई की जा रही है।

32 घंटे से बूंद-बूंद पानी को तरसे ऋषिकुल न्यू कॉलोनी के लोग

हरिद्वार । मध्य हरिद्वार की ऋषिकुल न्यू कॉलोनी में पेयजल संकट से लोग परेशान है। करीब 2500 की आबादी वाली कॉलोनी को पिछले 32 घंटे से घरों के नलों में पीने का पानी नहीं मिला है। इससे लोगों को पीने के पानी के लिए जूझना पड़ रहा है। पानी की व्यवस्था करने के लिए लोगों को इधर-उधर भटक रहे है। वहीं उत्तराखंड जल संस्थान के अधिकारियों के अनुसार शनिवार मध्यरात्रि या रविवार सुबह तक पानी की सप्लाई सुचारू होने की उम्मीद है। शनिवार को ऋषिकुल कॉलोनी के स्थानीय लोगों ने जानकारी देते हुए बताया कि शुक्रवार सुबह 10 बजे से पेयजल आपूर्ति बाधित है। शनिवार रात 10 बजे तक भी समस्या का समाधान नहीं हो सका। लोगों को पानी की वैकल्पिक व्यवस्था करनी पड़ रही है। ऊर्जा निगम का ट्रांसफार्मर खराब होने के बाद जल संस्थान जनरेटर से पंप चला कर पानी की आपूर्ति करने की कोशिश कर रहा है। लेकिन जनरेटर से पंप चलाने पर पानी का प्रेशर नहीं बन रहा है। इस वजह से निचले क्षेत्र के घरों में गंदा बदबूदार पानी सप्लाई होने की समस्या बन रही है। ऊपरी इलाकों में पानी नहीं मिल रहा है। वहीं जल संस्थान के अधिशासी अभियंता विपिन कुमार के अनुसार, क्षेत्र में ऊर्जा निगम का ट्रांसफार्मर खराब होने के कारण पेयजल आपूर्ति प्रभावित हुई है। जनरेटर से पंप चलाने के बावजूद पानी का पर्याप्त प्रेशर नहीं बन रहा है। इस संबंध में ऊर्जा निगम से ट्रांसफार्मर ठीक कराने का आग्रह किया गया है। अधिकारियों का कहना है कि ऊर्जा निगम का मरम्मत कार्य पूरा होने के बाद शनिवार रात देर या रविवार सुबह तक कॉलोनी में पेयजल आपूर्ति सुचारू होने की उम्मीद है।

मेला अस्पताल में दो चिकित्सकों के न होने से करीब 80 मरीजों को बिना उपचार लौटना पड़ा

हरिद्वार । मेला अस्पताल में चिकित्सकों की अनुपलब्धता के चलते शनिवार को मरीजों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। अस्पताल में दो प्रमुख चिकित्सकों के मौजूद नहीं होने से करीब 80 मरीजों को बिना उपचार कराए ही वापस लौटना पड़ा। जानकारी के अनुसार, मेला अस्पताल के मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. राजीव रंजन तिवारी विभागीय कैंप में शामिल होने के कारण शनिवार को अस्पताल में उपलब्ध नहीं रहे। इसके चलते मनोरोग संबंधी समस्याओं से पीड़ित करीब 30 मरीजों को उपचार नहीं मिल सका। वहीं, अस्पताल के सीएमएस एवं बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. शशिकांत भी विभागीय कार्य से बाहर रहे। उनके उपलब्ध नहीं होने के कारण करीब 50 बीमार बच्चों को उपचार नहीं मिल पाया। अस्पताल पहुंचे मरीजों ने बताया कि वे काफी उम्मीद लेकर उपचार के लिए आए थे, लेकिन चिकित्सक के नहीं मिलने से उन्हें निराश होकर लौटना पड़ा।

1946 की ऐतिहासिक संस्था पर परिवार विशेष का कब्जा, रुड़की में सड़कों पर उतरा सर्व समाज

रुड़की । रुड़की की प्रतिष्ठित शिक्षण संस्था बी.एस.एम. चैरिटेबल ट्रस्ट को लेकर



चल रहा विवाद अब केवल एक संस्थागत खींचतान न रहकर आपराधिक साजिश और वित्तीय अनियमितताओं के बड़े आरोपों में बदल गया है। परशुराम भवन में भारतीय ब्राह्मण समाज और सर्व समाज द्वारा दिए जा रहे धरने के दूसरे दिन मामला तब और गरमा गया जब जन निर्माण पार्टी के प्रत्याशी दीपक शर्मा और समाजसेवी विनीत शर्मा (चीनू पंडित) ने इस आंदोलन को खुला समर्थन देते हुए पूरे मामले की एसआईटी (SIT) जांच और दोषियों को जेल भेजने की मांग उठा दी। धरने के दूसरे दिन जन निर्माण पार्टी के प्रत्याशी दीपक शर्मा ने प्रदर्शनकारियों के बीच पहुंचकर कहा कि रुड़की की पहचान एक ऐतिहासिक शिक्षा नगरी के रूप में है और किसी भी सूरत में शिक्षा की पवित्रता से खिलवाड़ नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पूर्वजों द्वारा 1946 में स्थापित की गई संस्था को कब्जामुक्त कराना पूरे शहर के सम्मान की बात है। वहीं, समाजसेवी विनीत शर्मा (चीनू पंडित) ने वीडियो संदेश जारी कर आरोप लगाया कि सर्व समाज की सार्वजनिक संपत्ति को निजी पारिवारिक संपत्ति बनाने का यह बड़ा षड्यंत्र है। उन्होंने मांग की कि इस पूरे मामले की निष्पक्ष एसआईटी (SIT) जांच कराई जाए और सरकारी फंड व संस्था हड़पने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई हो। विवाद की मुख्य जड़ 1946 में पंजीकृत 'ब्राह्मण संस्कृत महाविद्यालय समिति' के स्वरूप को बदलने से जुड़ी है। भारतीय ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष सतीश कुमार और साहित्यकार प्रो. डॉ. सम्राट सुधा के अनुसार, वर्ष 2020 तक सोसाइटीज, चिट्स एंड फंड्स हरिद्वार कार्यालय में इस संस्था के ट्रस्ट बनने का कोई रिकॉर्ड दर्ज नहीं था। जब मामला हाईकोर्ट पहुंचा, तब तत्कालीन अध्यक्ष द्वारा कथित तौर पर एक बैकडेट (पूर्व दिनांकित) पत्र सौंपकर दावा किया गया कि ट्रस्ट वर्ष 2015 में ही बन गया था। इसके साथ ही, पूर्व उपाध्यक्ष बिट्टू शर्मा ने यूजीसी (GC) से मिले सरकारी अनुदान के गबन का मुद्दा उठाते हुए आरोप लगाया कि बैंक खाता संस्था के बजाए व्यक्तिगत नाम से संचालित किया गया, जो वित्तीय धोखाधड़ी की पुष्टि करता है। धरनास्थल पर समाज सेवी मनोज शर्मा ने आरोप लगाया कि उच्च शिक्षा निदेशक आनंद सिंह उनियाल और हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय (HNBGU) प्रशासन की ओर से गंभीर शिकायतों के बावजूद पिछले छह महीनों से कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं की गई है।

सावक मंच के धरने का असर, नाईसोता नाले पर सीवर टेपिंग का काम शुरू

हरिद्वार । मां गंगा को सीवरयुक्त गंदे नालों के प्रदूषण से मुक्त कराने की मांग को लेकर राष्ट्रीय सावक मंच के धरने का असर नजर आया। धरने का तत्काल संज्ञान लेते हुए सिटी मजिस्ट्रेट हरगिरी ने मंच के संयोजक चंद्रमोहन कौशिक से वार्ता की। इसके बाद वह जल संस्थान, सीवर विभाग और नगर निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ नाईसोता नाले पर पहुंचे और सीवर टेपिंग का काम शुरू कराया। राष्ट्रीय सावक मंच के संयोजक चंद्रमोहन कौशिक ने मौके पर कार्रवाई शुरू कराने के लिए सिटी मजिस्ट्रेट का आभार जताया। उन्होंने कहा कि मां गंगा में गिर रहे सीवरयुक्त गंदे पानी का केवल तात्कालिक नहीं, बल्कि स्थायी समाधान होना चाहिए।सीवर का गंदा पानी किसी भी सूरत में गंगा में नहीं जाना चाहिए। नालों की टेपिंग के साथ ऐसी व्यवस्था की जाए कि भविष्य में भी गंदा पानी गंगा में न पहुंचे। कौशिक ने कहा कि मां गंगा करोड़ों हिंदुओं की आस्था का केंद्र हैं। जन्म से लेकर मृत्यु के बाद तक अनेक धार्मिक संस्कार मां गंगा के जल से जुड़े हैं। करीब दो माह बाद कुंभ में भी श्रद्धालु मां गंगा में आस्था की डुबकी लगाएंगे। ऐसे में गंगा की स्वच्छता और निर्मलता बनाए रखना सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि मां गंगा की गोद में जन्म लेकर कर्म करने का अवसर मिलना सौभाग्य है। गंगा को सीवरयुक्त नालों से प्रदूषित होते नहीं देख सकते। मां गंगा को स्वच्छ, निर्मल और पवित्र बनाने के लिए राष्ट्रीय सावक मंच का संघर्ष और प्रयास आगे भी जारी रहेगा।

उर्मिला सनावर की जमानत पर टली सुनवाई

हरिद्वार । अभिनेत्री उर्मिला सनावर को अभी जेल में ही रहना होगा। रंगदारी और धमकी के मामले में उर्मिला की जमानत अर्जी पर गुरुवार को सुनवाई नहीं हो सकी। कोर्ट ने अब सुनवाई के लिए 31 अक्तूबर की तारीख तय की है। लोक अभियोजक धर्मेंद्र आर्य ने उर्मिला को जमानत नहीं मिलने की पुष्टि की है। लोक अभियोजक के मुताबिक, गुरुवार को रानीपुर कोतवाली पुलिस ने मामले से संबंधित जांच आख्या दाखिल करने के लिए अदालत से अतिरिक्त समय मांगा। इसी कारण जमानत अर्जी पर सुनवाई टाल दी गई। बता दें कि मामले में 24 अक्तूबर को ज्वालापुर के पूर्व विधायक सुरेश राठौड़ की बेटी दीपिका राठौड़ ने उर्मिला सनावर के खिलाफ रानीपुर कोतवाली में शिकायत दर्ज कराई थी।शिकायत में सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक टिप्पणियां करने, व्हाट्सएप कॉल के जरिए रविदास धाम की संपत्ति अपने नाम कराने और पांच करोड़ रुपये मांगने के आरोप लगाए गए। दीपिका ने शिकायत में मांग पूरी नहीं होने पर परिवार को जान से मारने की धमकी देने का आरोप भी लगाया है। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की थी। इसके बाद 25 अक्तूबर को सहारनपुर से उर्मिला को गिरफ्तार किया गया। अदालत में पेशी के बाद उर्मिला को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में रोशनाबाद जिला कारागार भेज दिया गया था। अब उनकी जमानत अर्जी पर 31 अक्तूबर को सुनवाई होगी।

कुंभ से पहले भीड़ प्रबंधन की तैयारी, पंतद्वीप से चंडी चौक तक व्यवस्थाएं सुधारने के आदेश

– मेलाधिकारी सोनिका ने अधिकारियों के साथ पंतद्वीप, रोड़ी-बेलवाला और चंडी चौक क्षेत्र का किया स्थलीय निरीक्षण, निर्माण कार्यों में तेजी लाने के निर्देश

– बारिश के बीच भी जारी रही तैयारियों की समीक्षा, मौके पर ही तय किए गए सुधार और व्यवस्थाओं से जुड़े जरूरी कदम



हरिद्वार । कुंभ-2027 के आयोजन को लेकर हरिद्वार में तैयारियां तेजी से आगे बढ़ रही हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा, सुगमता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही भीड़ प्रबंधन की चुनौतियों से निपटने के लिए मेला प्रशासन व्यवस्थाओं को समय रहते चाक-चौबंद करने में जुटा है।

इसी क्रम में मेलाधिकारी सोनिका ने गुरुवार को जिलाधिकारी मयूर दीक्षित, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक नवनीत सिंह भुल्लर, अपर मेलाधिकारी दयानंद सरस्वती तथा अन्य संबंधित अधिकारियों के साथ मेला क्षेत्र के विभिन्न स्थलों का निरीक्षण किया। इस दौरान निर्माण कार्यों की प्रगति का जायजा लेने के साथ ही प्रमुख मार्गों, पुलों, घाटों और भीड़ की आवाजाही से जुड़े बिंदुओं की पड़ताल की गई। अधिकारियों ने मौके पर ही आवश्यक सुधार कार्यों और व्यवस्थाओं को लेकर विचार-विमर्श कर महत्वपूर्ण निर्देश दिए।

बारिश के बीच चले इस निरीक्षण के दौरान विभिन्न विभागों के अधिकारी अपनी कार्ययोजनाओं और तैयारियों के साथ मौजूद रहे। खुद मेलाधिकारी सोनिका भी निरीक्षण के दौरान अपने लैपटॉप पर तैयारियों की समीक्षा और विभिन्न व्यवस्थाओं से जुड़ी कार्ययोजनाओं को डिजिटल प्रारूप में परखती और दर्ज करती रहीं।

पंतद्वीप क्षेत्र में भीड़ प्रबंधन के लिए सुधार के निर्देश

अधिकारियों की टीम ने सबसे पहले कांगड़ा पुल और संजय पुल के संगम के निकट पंतद्वीप की नोज वाले क्षेत्र का निरीक्षण किया। कुंभ के दौरान श्रद्धालुओं की आवाजाही और भीड़ प्रबंधन की दृष्टि से महत्वपूर्ण इस क्षेत्र में मार्गों और प्लेटफॉर्म की स्थिति का जायजा लिया गया। मेलाधिकारी और जिलाधिकारी ने यहां आवश्यक सुधार कार्य कराने तथा आवाजाही को अधिक व्यवस्थित बनाने के लिए जरूरी कदम उठाने के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान क्षेत्र में अनुपयोगी और क्षतिग्रस्त पोल हटाने, खंभों एवं पेड़ों से लटक रहे तारों, रस्सियों और अन्य अनावश्यक सामग्री को हटाने पर जोर दिया गया। साथ ही घाटों और प्लेटफॉर्म को सुव्यवस्थित रखने तथा साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। अधिकारियों ने घाटों और पुलों के सौंदर्यीकरण से जुड़े कार्यों को भी शीघ्र पूरा करने को कहा, ताकि कुंभ के दौरान इस क्षेत्र में श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हो सकें।

रोड़ी-बेलवाला और चंडी पुल के कार्यों की समीक्षा

इसके बाद अधिकारियों ने रोड़ी-बेलवाला क्षेत्र में निर्माणाधीन प्रशासनिक मार्ग का निरीक्षण कर कार्य की प्रगति का जायजा लिया। चंडी पुल पर बन रहे डबल लेन अंडरपास की स्थिति की भी समीक्षा की गई। कुंभ के दौरान यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने में इस कार्य के महत्व को देखते हुए अधिकारियों को इसे निर्धारित समयसीमा के भीतर पूरा करने के निर्देश दिए गए।

चंडी चौक से वाल्मीकि चौक तक यातायात सुधार पर जोर

निरीक्षण के दौरान चंडी चौक से वाल्मीकि चौक की ओर जाने वाली सड़क पर चल रहे चौड़ीकरण और सुधार कार्यों की भी समीक्षा की गई।

यह क्षेत्र यातायात और पैदल आवाजाही की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि सड़क सुधार के कार्यों में तेजी लाते हुए ऐसे सभी जरूरी उपाय सुनिश्चित किए जाएं, जिनसे यातायात का संचालन सुचारु रहे और पैदल चलने वाले श्रद्धालुओं को आवागमन में असुविधा न हो। इस कार्य को भी प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र पूरा करने पर जोर दिया गया।

कुंभ-2027 की तैयारियों के तहत मेला प्रशासन निर्माण कार्यों की प्रगति के साथ ही उनसे जुड़ी व्यवस्थाओं की भी लगातार निगरानी कर रहा है। स्थलीय निरीक्षण के माध्यम से समस्याओं की पहचान कर मौके पर समाधान के निर्देश दिए जा रहे हैं, ताकि कुंभ के दौरान श्रद्धालुओं को सुरक्षित, सुगम और सुव्यवस्थित आवागमन की सुविधा मिल सके।

निरीक्षण के दौरान उप मेलाधिकारी मनजीत सिंह, पीआईयू के अधिशासी अभियंता प्रवीण कुश, यूपीडीसीसी के परियोजना प्रबंधक आशीष भट्ट सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में धामी सरकार का बड़ा कदम, 1818 पदों पर भर्ती प्रक्रिया शुरू

देहरादून । मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में उत्तराखंड सरकार युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में निरंतर महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। इसी क्रम में राज्य के विभिन्न विभागों में 1818 रिक्त पदों पर भर्ती के लिए उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग को अध्याचन भेजा गया है। इन पदों पर भर्ती से प्रदेश के युवाओं को सरकारी सेवा में आने के नए अवसर मिलेंगे। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि राज्य सरकार युवाओं के भविष्य को लेकर गंभीर है और उन्हें योग्यता के आधार पर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि अब तक प्रदेश में 35 हजार से अधिक युवाओं को पूरी पारदर्शिता के साथ सरकारी नौकरी प्रदान की जा चुकी है। सरकार ने भर्ती प्रक्रियाओं में पारदर्शिता, निष्पक्षता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी कदम उठाए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, 'हमारी सरकार का संकल्प है कि प्रदेश के प्रत्येक योग्य युवा को अपनी प्रतिभा और मेहनत के बल पर आगे बढ़ने का अवसर मिले। सरकारी भर्तियों में पारदर्शिता और निष्पक्षता से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा। युवाओं के सपनों को साकार करना और उन्हें रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है।'

भर्ती के लिए भेजे गए अध्याचन के अनुसार उत्तराखंड पुलिस विभाग में आरक्षी संवर्ग के 1187 पद, उप निरीक्षक नागरिक पुलिस के 93 पद, उप निरीक्षक अभिसूचना के 19 पद तथा प्लाटून कमांडर पीएसी/आईआरबी/एसडीआरएफ के 81 पद शामिल हैं। इसके अतिरिक्त अग्निशमन द्वितीय अधिकारी के 5 पदों पर भी भर्ती प्रस्तावित है।

कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवा विभाग में बंदीरक्षक के 117 पदों, आबकारी विभाग में आबकारी सिपाही के 50 पदों और उप आबकारी निरीक्षक के 2 पदों पर भर्ती की जाएगी।इसी प्रकार वन विभाग में वन आरक्षी के 189 पदों और स्पेशल टाइगर गार्ड्स के 75 पदों पर भर्ती प्रस्तावित है।

युवाओं के हित में निरंतर फैसले ले रही सरकार:

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में राज्य सरकार भर्ती प्रक्रियाओं को पारदर्शी बनाने और युवाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। विभिन्न विभागों में रिक्त पदों पर भर्ती के लिए अध्याचन भेजा जाना इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे प्रदेश के हजारों युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से सरकारी सेवा में आने का अवसर मिलेगा।

जलते पुतले, बढ़ते रावण: दशहरे का बदलता अर्थ



पुतलों का दहन नहीं, मन और समाज में छिपी बुराइयों का संहार ही दशहरे का असली संदेश है

- डॉ. सत्यवान सौरभ

हर साल दशहरे की शाम रावण के विशाल पुतले धू-धू कर जलते हैं। आतिशबाजी की चमक, पटाखों की गूंज और दर्शकों की तालियों के बीच बुराई पर अच्छाई की जीत का उत्सव मनाया जाता है। कुछ ही मिनटों में रावण का पुतला राख हो जाता है और लोग विजयादशमी की शुभकामनाएँ देते हुए अपने घर लौट जाते हैं। लेकिन एक सवाल हर साल हमारे सामने खड़ा रहता है—यदि रावण सचमुच मर रहा है, तो समाज में बुराइयाँ लगातार बढ़ क्यों रही हैं? आखिर हर साल जलने वाला रावण कौन है और हर साल नए रूप में खड़ा होने वाला रावण कौन?

दशहरा केवल एक धार्मिक पर्व या मनोरंजन का अवसर नहीं, बल्कि आत्ममंथन और सामाजिक चेतना का पर्व है। रावण दहन का वास्तविक उद्देश्य हमें यह याद दिलाना है कि अहंकार, अन्याय, छल, लोभ और अनैतिकता चाहे कितनी ही शक्तिशाली क्यों न हों, अंततः उनका पतन निश्चित है। लेकिन विडंबना देखिए कि हमने इस संदेश को एक वार्षिक आयोजन तक सीमित कर दिया है। पुतले बड़े होते जा रहे हैं, आयोजन भव्य होते जा रहे हैं और आतिशबाजी पर खर्च बढ़ रहा है, लेकिन क्या हमारे भीतर की बुराइयाँ उसी अनुपात में कम हो रही हैं?

रामायण का रावण विद्वान था, शक्तिशाली था और शिवभक्त भी था। उसके व्यक्तित्व में अनेक गुण थे, लेकिन अहंकार और पराई स्त्री के अपहरण जैसे गंभीर अधर्म ने उसकी समस्त उपलब्धियों को व्यर्थ कर दिया। उसका अंत इस बात का प्रतीक है कि ज्ञान, शक्ति और वैभव भी मनुष्य को महान नहीं बना सकते, यदि उसके आचरण में मर्यादा और नैतिकता का अभाव हो। रावण की पराजय हमें सिखाती है कि व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसकी विद्वत्ता या प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि उसके चरित्र और कर्मों से होती है। आज का रावण किसी एक चेहरे या पात्र का नाम नहीं है। वह उस मानसिकता का प्रतीक है, जो दूसरों के अधिकारों का हनन करती है, कमजोरों का शोषण करती है और अपने स्वार्थ के लिए नैतिकता को ताक पर रख देती है। जब किसी बेटी की अस्मिता पर हमला होता है, जब दहेज के लिए किसी बहू को प्रताड़ित किया जाता है, जब रिश्वत लेकर न्याय और अधिकारों का सौदा होता है, जब नशा किसी परिवार को उजाड़ देता है और जब लालच में रिश्तों का खून होता है, तब समझ लेना चाहिए कि रावण किसी पुतले में नहीं, हमारी सामाजिक व्यवस्था और मानवीय सोच में जीवित है। विडंबना यह भी है कि हम बुराई को पहचानने में जितनी तत्परता दूसरों के मामले में दिखाते हैं, उतना साहस अपने भीतर झाँकने में नहीं दिखाते। दूसरों का अहंकार हमें तुरंत दिखाई देता है, लेकिन अपना अहंकार स्वाभिमान लगने लगता है। दूसरों का छल हमें अपराध लगता है, लेकिन अपने स्वार्थ के लिए किया गया समझौता व्यावहारिकता कहलाता है। दूसरों की गलती पर हम कठोर निर्णय सुनाते हैं, जबकि अपनी गलतियों के लिए सौ बहाने खोज लेते हैं। यही दोहरा चरित्र भीतर के रावण को जीवित रखता है। आज समाज में महिलाओं के विरुद्ध हिंसा, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, नशाखोरी और नैतिक मूल्यों के क्षरण जैसी समस्याएँ गंभीर चिंता का विषय हैं। इनके समाधान के लिए केवल धार्मिक आयोजन पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए परिवार, विद्यालय, प्रशासन और समाज—सभी को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। बच्चों को केवल अच्छे संस्कारों का उपदेश देना पर्याप्त नहीं; उन्हें अपने व्यवहार में ईमानदारी, संवेदनशीलता और समानता के उदाहरण भी दिखाई देने चाहिए। कानून का भय आवश्यक है, लेकिन उससे भी अधिक जरूरी है कि मनुष्य के भीतर सही और गलत के बीच अंतर करने वाली नैतिक चेतना जीवित रहे। दशहरे का एक बड़ा संकट यह है कि हमने प्रतीकों को महत्व देना शुरू कर दिया है, जबकि उनके पीछे छिपे मूल्यों को अपनाने में पीछे रह गए हैं। राम का नाम लेना आसान है, लेकिन राम के आदर्शों पर चलना कठिन। सत्य की प्रशंसा करना सरल है, लेकिन सत्य के पक्ष में खड़े होने के लिए साहस चाहिए। न्याय की बातें करना सहज है, लेकिन अपने हितों के विरुद्ध भी न्याय का समर्थन करना वास्तविक चरित्र की परीक्षा है। मर्यादा का उपदेश देना आसान है, लेकिन अपनी इच्छाओं और व्यवहार पर मर्यादा का अनुशासन लागू करना कठिन है।

राम केवल आस्था के प्रतीक नहीं, बल्कि सत्य, न्याय, कर्तव्य और मर्यादा जैसे आदर्शों की प्रेरणा भी हैं। इन मूल्यों की सार्थकता तभी है, जब वे हमारे व्यवहार में दिखाई दें। यदि कोई व्यक्ति धार्मिक आयोजन में भाग लेकर लौटता है, लेकिन घर में अपने परिजनों के साथ दुर्व्यवहार करता है, कार्यस्थल पर बेईमानी करता है या समाज में कमजोर व्यक्ति का शोषण करता है, तो उसे अपने आचरण पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। धर्म का वास्तविक मूल्य बाहरी प्रदर्शन से नहीं, बल्कि मानवीय व्यवहार से निर्धारित होता है। रावण दहन को सार्थक बनाने के लिए जरूरी है कि हम इस पर्व को आत्मसुधार के अवसर में बदलें। प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर झाँके और ईमानदारी से स्वीकार करे कि उसके व्यवहार में कौन-सी बुराई दूसरों को नुकसान पहुँचा रही है। कोई क्रोध पर नियंत्रण करना सीखे, कोई लालच से दूर रहने का संकल्प ले, कोई महिलाओं के प्रति सम्मानपूर्ण व्यवहार को अपनी आदत बनाए और कोई अन्याय के सामने मौन रहने के बजाय उचित आवाज उठाए। इसी तरह समाज भ्रष्टाचार, हिंसा, दहेज प्रथा और नशे जैसी समस्याओं के विरुद्ध सामूहिक प्रयास करे। हमें यह भी समझना होगा कि बुराई का विरोध केवल भाषणों और नारों से नहीं होता। अपराध के पीड़ितों का साथ देना, अन्याय के विरुद्ध गवाही देने का साहस जुटाना, भ्रष्ट आचरण को प्रोत्साहित न करना और अपने अधिकारों के साथ दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना भी रावण के विरुद्ध संघर्ष है। सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत किसी विशाल मंच से नहीं, बल्कि व्यक्ति के छोटे-छोटे नैतिक निर्णयों से होती है। आज आवश्यकता इस बात की नहीं कि रावण के पुतले कितने ऊँचे बनाए जाएँ, बल्कि इस बात की है कि हमारा चरित्र कितना ऊँचा हो। आतिशबाजी की आवाज कितनी तेज हो, इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि अन्याय के विरुद्ध हमारी आवाज कितनी बुलंद हो। पुतले की ऊँचाई कुछ घंटों में समाप्त हो जाती है, लेकिन चरित्र की ऊँचाई पीढ़ियों तक समाज को दिशा दे सकती है।

दशहरे पर रावण का पुतला जलाकर लौटते समय यदि हम अपने भीतर के अहंकार, लोभ, ईर्ष्या और अनैतिकता को ज्यों का त्यों लेकर घर लौटते हैं, तो हमें उत्सव की सफलता पर नहीं, अपनी विफलता पर विचार करना चाहिए। बुराई का अंत मैदान में खड़े पुतले के गिरने से नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर अन्याय के प्रति असहमति और नैतिकता के प्रति प्रतिबद्धता जागने से होता है। इस विजयादशमी पर संकल्प केवल इतना न हो कि रावण का पुतला जलाना है। संकल्प यह भी हो कि अपने भीतर की किसी एक बुराई को पहचानकर उसे समाप्त करना है, किसी अन्याय का विरोध करना है और अपने व्यवहार से किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना है। जिस दिन हम ऐसा करने लगेंगे, उस दिन दशहरा केवल एक परंपरा नहीं रहेगा, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का अभियान बन जाएगा। रावण हर साल जलता है, लेकिन बुराई तब तक जीवित रहती है, जब तक हम उसे अपने भीतर और अपने आसपास जगह देते हैं। असली विजयादशमी उसी दिन होगी, जब पुतलों के साथ-साथ हमारी बुराइयाँ भी जलेंगी और हमारे आचरण में राम के आदर्श दिखाई देंगे।

राम के आध्यात्मिक मूल्यों को करे आत्मसात

डॉ श्री गोपाल नारसन

रावण पर राम की विजय का प्रतीक है दशहरा पर्व। इस अवसर पर हम राम की जय जयकार करते है और रावण को उसकी बुराइयों के कारण जलाने का जश्न मनाते है।वर्षों से चली आ रही यह परम्परा आगे भी जारी रहेगी।लेकिन बार बार रावण को जला देने पर भी आज तक रावण रूपी बुराई समाप्त नहीं हो पाई।सच यह है कि रावण तो हम सबके अंदर है,जो विकार रूप में बैठा है।जिसे हम हटाना ही नहीं चाहते।हम राम रावण से जुड़े किस्सों को रामायण या फिर राम चरित मानस के माध्यम से मंचित कर उन्हें हर वर्ष याद करते है। रामायण के मुख्य पात्र राम, सीता , हनुमान व रावण हैं । रामायण हिंदू धर्म की एक प्रमुख आध्यात्मिक पुस्तक मानी जाती है परंतु बिडंबना यह है कि रामायण को बार बार पढ़ने व मंचित करने के वावजूद भी उसमें लिखे आध्यात्मिक मूल्यों की धारणा नहीं हो पाती । हम राम के नाम रूप पर बहस करते रहते हैं। इससे रामायण रचना की सार्थकता कभी भी सिद्ध नहीं हो सकती है । इसके लिए आवश्यक है कि हम रामायण को आत्मसात करे। रामायण महर्षि बाल्मीकी के द्वारा लिखित एक आध्यात्मिक पुस्तक है । हम यह जानते हैं कि महर्षि बाल्मीकी आध्यात्मिक जागृति के एक प्रेरक नायक थे ।ईश्वरीय अनुभूति के द्वारा उनका जीवन दिव्य व महान हो गया था। जो भी ईश्वर की अनुभूति कर लेता है ।वह दूसरों का शुभचिंतक हो जाता है व स्वयं की अनुभूतियों को समाज कल्याण हेतु प्रयोग कर लोगों में एक नई सोच फैलाने का कार्य करता है, स्वयं का जीवन आध्यात्मिक होने पर ही महर्षि बाल्मीकी ने समाज में आध्यात्मिक जागृति लाने का बीड़ा उठाया था । मोह माया में फँसें लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान रोचक लग सके ,इसके लिए उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान को एक रोचक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया। जिसमें मुख्य नायक व नायिका राम और सीता को रखा गया । जैसे आजकल सरकार या कोई भी समाज सुधारक यदि लोगों को किसी भी बुराई के बारे में जागरूक करना चाहतें है तो वह एक डॉक्युमेंट्री फ़िल्म या विज्ञापन के ज़रिए इस संदेश को जन - जन में पहुँचाते हैं । लघु फ़िल्म या विज्ञापन में वह किसी ऐसे चेहरे को प्रयोग करेगें जो लोग़ों में प्रसिद्ध हो ,ताकि लोग उसको आत्मसात करें । महर्षि बाल्मीकी ने त्रेता युग के बाद आए द्वापर युग व उसके बाद आने वाले समय में समाज में आध्यात्मिक क्रांति लाने हेतु राम व सीता का नाम व चरित्र का प्रयोग किया जो त्रेता युग में विश्व में राज्य करके गए थे। विडम्बना इस बात की है कि हम रामायण में लिखित सब पात्रों को उसी तरह से स्वीकार करते हैं जैसे रामायण को पढ़ने पर जान पढ़ता है परन्तु इस तरह से तो रामायण में दर्शाए गए पूर्णतः अहिंसक पात्र भी हिंसक नज़र आते हैं। जैसे राम के द्वारा रावण का वध होना भगवान की परिभाषा को खंडित करता है, राम यदि भगवान हैं तो वह हिंसक हो ही नहीं सकते और राम यदि सर्वशक्तिमान ईश्वर है तो उनकी सीता को एक दैत्य (रावण) कैसे उठाकर ले जा सकता है ? इसलिए कहीं न कहीं रामायण को किसी और परिपेक्ष में देखने की आवश्यकता है .... ।रामायण का वास्तविक़ अर्थ जानने के लिए रामायण के विभिन्न पात्रों को निम्नलिखित रूप में समझ कर पढ़ें तो आपको उसमें लिखा एक एक आध्यात्मिक बिंदु समझ आ जाएगा .....।

1. राम : राम वास्तव में निराकार शिव परमात्मा ही है, जो संगम युग पर धरा पर अवतरित हो कर अपनी बिछड़ी हुई सीता (सतयुगी आत्मा) को रावण (विकारों) के चंगुल से छुड़ाने आया है ।

2. सीता : हर वह आत्मा जो वास्तव में पवित्र है परंतु आज रावण के चंगुल में फँसने के कारण दुखी और अपवित्र हो गई है ।

3. रावण : पतित व विकार युक्त सोच व उसकी धारणा ही रावण है। जिसमें फँसी हर आत्मा आज विकर्मों के बोझ तले दबती जा रही है । पाँच मुख्य विकार पुरुष के व पाँच मुख्य विकार स्त्री के ही रावण के दस शीश हैं ।

4. हनुमान : वास्तव में धरा पर अवतरित हुए परमात्मा को सर्वप्रथम पहचानने वाली आत्मा (ब्रह्मा बाबा) ही हनुमान हैं ,परंतु हर वह आत्मा जो ईश्वर को पहचान दूसरी आत्माओं (सीता) को धरा पर आए ईश्वर (राम) का संदेश देने के निमित बनती है वह भी हनुमान की तरह ही है ।

5. वानर सेना : साधारण दिखने वाली मनुष्य आत्माएँ ईश्वर (राम) को पहचान कर, संस्कार परिवर्तन द्वारा पूरानी दुनियाँ या रावण राज्य (पतित सोच पर आधारित दुनिया) को समाप्त करने में राम का साथ देने वाली संसार की 33 करोड़ आत्माएँ ही वानर सेना है ।

निजी दर्द को शब्दों में पिरोकर कादर खान ने लिखा था मुकद्दर का सिकंदर का यादगार सीन



बॉलीवुड अभिनेता कादर खान ने अपने करियर में कभी विलेन बनकर दर्शकों को डराया, तो कभी कॉमेडी से हंसाया। वहीं अपनी लेखनी से अमिताभ बच्चन जैसे सुपरस्टार के किरदारों को खास पहचान भी दी लेकिन फिल्मों में आने से पहले कादर खान की जिंदगी बिल्कुल अलग थी। वह सिविल इंजीनियरिंग के प्रोफेसर थे और पढ़ाने के साथ थिएटर में भी एक्टिव रहते थे। फिर उनकी जिंदगी में एक ऐसा मोड़ आया, जिसने उन्हें हिंदी सिनेमा के सबसे चर्चित डायलॉग राइटर्स में शामिल कर दिया। कादर खान के लिखे डायलॉग्स की ताकत का एक बड़ा उदाहरण 1978 में रिलीज हुई फिल्म मुकद्दर का सिकंदर का 16 पन्नों वाला सीन है। कादर खान ने इस सीन में अपने जीवन के अनुभवों को उतार दिया था। जब उन्होंने अमिताभ बच्चन को इसे सुनाया तो बिग बी इतने भावुक हो गए कि उनकी आंखों में आंसू आ गए। कादर खान का जन्म 1937 में काबुल में हुआ था। उनका परिवार बाद में मुंबई आ गया, जहां उन्होंने मुश्किल हालात में अपना बचपन बिताया। पढ़ाई पूरी करने के बाद वह मुंबई के एमएच साबू सिद्दीक पॉलिटेक्निक में लेक्चरर रहे और उन्हें बेस्ट टीचर का अवॉर्ड भी मिला लेकिन पढ़ाने के साथ-साथ एक्टिंग और डायलॉग लिखने का शौक उनके भीतर बना रहा। वह थिएटर में हिस्सा लेते थे और स्टेज पर अपनी प्रतिभा दिखाते थे। इसी दौरान एक नाटक में उनके काम ने लोगों का ध्यान खींचा और उन्हें फिल्मों के लिए डायलॉग लिखने का मौका मिला। कादर खान ने 1970 के दशक की शुरुआत में फिल्मों के लिए डायलॉग लिखना शुरू किया। 1972 में आई फिल्म जवानी दीवानी को उनके शुरुआती फिल्मी लेखन के अहम पड़ाव के तौर पर याद किया जाता है। इसके बाद राजेश खन्ना की फिल्म रोटी ने उनके करियर को नई पहचान दी।

मनमोहन देसाई और प्रकाश मेहरा जैसे डायरेक्टर्स के साथ उनके काम ने उन्हें इंडस्ट्री में मजबूत जगह दिलाई। उन्होंने अमर अकबर एंथनी, परवरिश, मुकद्दर का सिकंदर, लावारिस, नसीब और कुली जैसी फिल्मों के लिए डायलॉग लिखे। उनकी खासियत यह थी कि वह किरदार के हिसाब से भाषा और अंदाज बदल लेते थे। उनके डायलॉग में कहीं इमोशन था, कहीं गुस्सा और कहीं ऐसा मजाक, जो सीधे दर्शकों से जुड़ जाता था।

कादर खान के करियर का एक यादगार किस्सा फिल्म मुकद्दर का सिकंदर से जुड़ा है। उन्होंने बताया था कि फिल्म में एक सीन था, जिसमें अमिताभ बच्चन का किरदार स्टेज पर अपनी जिंदगी की कहानी सुनाता है। इस सीन को लिखते समय कादर खान ने अपने निजी जीवन के अनुभवों को भी शामिल किया था। यही वजह थी कि वह इस सीन को लेकर काफी भावुक थे। जब उन्होंने इसे फिल्म के डायरेक्टर और प्रोड्यूसर प्रकाश मेहरा को सुनाया तो वह भी भावुक हो गए थे।

लेकिन जब यह स्क्रिप्ट अमिताभ बच्चन तक पहुंची तो 16 पन्नों का सीन देखकर वह हैरान रह गए। उन्हें लगा कि इतने लंबे डायलॉग याद करना और उन्हें पर्दे पर सही भाव के साथ बोलना मुश्किल होगा। उन्होंने सीन को छोटा करने की बात कही। कादर खान उस वक्त दूसरी फिल्म की शूटिंग में व्यस्त थे। फिर अमिताभ बच्चन की तरफ से उन्हें बुलावा आया। कादर खान को लगा कि शायद उनके सीन में कोई कमी निकाली गई है, लेकिन वहां पहुंचने पर उन्हें अपनी बात समझाने का मौका मिला।

कादर खान ने इंटरव्यू में बताया था कि जब वह अमिताभ बच्चन के पास पहुंचे तो उन्होंने सभी को कमरे से बाहर भेज दिया और खुद पूरा सीन पढ़कर सुनाना शुरू किया। जैसे-जैसे कादर खान अपनी जिंदगी से जुड़े अनुभवों को शब्दों में उतारते गए, सीन का इमोशनल असर सामने आता गया।

कादर खान के मुताबिक, पूरा सीन सुनते-सुनते अमिताभ की आंखों में आंसू आ गए। उन्हें समझ आ गया कि ये सिर्फ लंबे डायलॉग नहीं हैं, बल्कि किरदार की जिंदगी और दर्द को बयान करने वाले शब्द हैं। इसके बाद अमिताभ ने कादर खान से कहा कि वह आगे भी अपनी आवाज में सीन रिकॉर्ड करके दिया करें, क्योंकि उनके सुनाने का अंदाज डायलॉग के भाव समझने में मदद करता था। कादर खान की पहचान सिर्फ डायलॉग राइटर तक सीमित नहीं रही। 1973 में फिल्म दाग से बतौर एक्टर उनके फिल्मी सफर की शुरुआत हुई। गोविंदा के साथ उनकी कॉमेडी वाली फिल्मों ने 1990 के दशक में उन्हें नई पीढ़ी के दर्शकों के बीच भी लोकप्रिय बनाया। दुल्हे राजा, कुली नंबर 1 और हीरो नंबर 1 जैसी फिल्मों में उनकी कॉमिक टाइमिंग खूब पसंद की गई।

एक्ट्रेस प्रिया ठाकुर को पर्दे पर दुल्हन बनना पसंद, टीवी शो वसुधा के बारे में दी अपडेट



टीवी एक्ट्रेस प्रिया ठाकुर इन दिनों अपने शो वसुधा में देव और वसुधा की शादी के ट्रैक को लेकर एक्साइटेड हैं। जी टीवी के इस शो में दोनों की जिंदगी एक नया मोड़ लेने जा रही है। खास बात यह है कि इस बार वसुधा को चंद्रिका की मंजूरी भी मिल रही है। शो में देव का किरदार अभिषेक शर्मा निभा रहे हैं, जबकि वसुधा के रोल में प्रिया ठाकुर नजर आ रही हैं। शादी के इस ट्रैक को लेकर प्रिया ने बताया कि पर्दे पर दुल्हन बनना उन्हें हमेशा पसंद रहा है, हालांकि भारी लहंगे, जूलरी और घंटों तक शूटिंग करना आसान नहीं होता। शो में देव और वसुधा की शादी पहले भी हो चुकी है, लेकिन इस बार उनकी शादी का मतलब दोनों के लिए काफी अलग है। इसकी सबसे बड़ी वजह चंद्रिका का वसुधा को अपनी बड़ी बहू के रूप में स्वीकार करना है। दर्शक लंबे समय से इस पल का इंतजार कर रहे थे और अब पूरे परिवार को दोनों के रिश्ते का जश्न मनाते देखना उनके लिए खास होगा।

शादी के ट्रैक के बारे में बात करते हुए प्रिया ने कहा, दर्शक बेसब्री से इंतजार कर रहे थे कि चंद्रिका वसुधा को अपनी बड़ी बहू के रूप में स्वीकार करें। मुझे लगता है कि यही बात इस शादी को खास बनाती है। भले ही देव और वसुधा की पहले भी शादी हो चुकी है, लेकिन इस बार चंद्रिका की मंजूरी और आशीर्वाद के साथ पूरा परिवार उनके रिश्ते का जश्न मना रहा है। सभी को उनके लिए खुश होते देखना हमारे लिए भी खास पल है और उन फैंस के लिए भी, जो लंबे समय से देव और वसुधा को इस तरह एक होते देखना चाहते थे। प्रिया ने कहा, शो में शादी से जुड़े कई शानदार फंक्शन दिखाए गए हैं और यह उन सभी फैंस के लिए एक छोटा सा तोहफा है, जिन्होंने देव और वसुधा के सफर में उनका साथ दिया है। शादी के ट्रैक की शूटिंग हमेशा मजेदार होती है, लेकिन इसके साथ कई चुनौतियां भी आती हैं। भारी कपड़े, जूलरी और सेट पर लंबे समय तक काम करना आसान नहीं होता। मुझे स्क्रीन पर दुल्हन बनना हमेशा पसंद रहा है। मुझे खूबसूरत और रॉयल आउटफिट्स के साथ जूलरी पहनना अच्छा लगता है, हालांकि उन्हें लंबे समय तक संभालकर रखना आसान नहीं होता।

उन्होंने कहा, इस पूरे ट्रैक की शूटिंग का अनुभव शानदार रहा है। मुझे यकीन है कि दर्शकों को देव और वसुधा की जिंदगी के इस नए सफर को देखना पसंद आएगा।

देव का किरदार निभाने वाले अभिषेक शर्मा भी इस शादी के ट्रैक को लेकर काफी खुश हैं। उन्होंने कहा, ऐसा लगता है कि देव और वसुधा को आखिरकार उनकी खुशियों भरी जिंदगी मिल रही है, जिसका फैंस लंबे समय से इंतजार कर रहे थे। शादी के ट्रैक की शूटिंग काफी एक्साइटिंग होती है। हमारी टीम काफी मेहनत कर रही है, जिससे पूरा काम आसान और मजेदार बन जाता है। पूरी कास्ट भी काफी प्रोफेशनल और सपोर्टिव है। जब आसपास इतने अच्छे लोग हों, तो मुश्किल सीन भी यादगार बन जाते हैं। शो में इससे पहले हल्दी, मेहंदी, संगीत और शादी की रस्मों जैसे कई फंक्शन दिखाए जा चुके हैं। अब देव और वसुधा की शादी का यह ट्रैक दर्शकों के लिए खास होने वाला है।

क्रिसमस से प्यार, लेकिन एक जनवरी के बाद नहीं चाहिए जश्न, हिलेरी डफ ने बताई दिलचस्प बात



अभिनेत्री और गायिका हिलेरी डफ क्रिसमस पर प्यार और उलझन, दोनों महसूस करती हैं। हालांकि, वह इस त्योहार से जुड़ी परंपराओं, संगीत, सजावट और खरीदारी का खूब आनंद लेती हैं, लेकिन चाहती हैं कि इसका उत्साह एक जनवरी तक खत्म भी हो जाए। अब हिलेरी अपने नए ईपी हॉलिडे थिंग्स के जरिए क्रिसमस के इसी खास रंग को लेकर आई हैं। हिलेरी ने इंस्टाग्राम पर अपने नए ईपी के कवर फोटोशूट की कई तस्वीरें साझा कीं। इसके साथ उन्होंने बताया कि उन्हें क्रिसमस बहुत पसंद है। त्योहार से जुड़ी परंपराएं, गाने, सजावट, गर्म कपड़े पहनना, खरीदारी करना और जिंजरब्रेड से घर बनाना उन्हें काफी पसंद है। हालांकि, वह इस पूरे उत्साह को सीमित समय तक ही रखना चाहती हैं। होंने लिखा, जो लोग मुझे जानते हैं, वे जानते हैं कि मुझे क्रिसमस और छुट्टियों का मौसम बहुत पसंद है, लेकिन इसके साथ मेरा रिश्ता थोड़ा उलझा हुआ भी है। मैं क्रिसमस के उत्साह, परंपराओं, संगीत, सजावट, स्वेटर, खरीदारी, जिंजरब्रेड के घरों और ऐसी तमाम चीजों के लिए उत्साहित रहती हूं। लेकिन मैं चाहती हूं कि यह सब एक जनवरी तक खत्म हो जाए और सारी चीजें वापस अटारी में रख दी जाएं। हिलेरी ने आगे अपने फैंस से नए ईपी का आनंद लेने की अपील की। उन्होंने कहा, इस ईपी को खूब सुनें, फिर इसे समेटकर रख दें और अगले साल दोबारा इसका आनंद लें। मेरा नया ईपी हॉलिडे थिंग्स अब रिलीज हो चुका है। हिलेरी डफ ने अपने म्यूजिक करियर की शुरुआत साल 2002 में क्रिसमस एल्बम सांता क्लॉज लेन से की थी। इस एल्बम में क्रिसमस से जुड़े कई लोकप्रिय गानों के नए वर्जन शामिल थे। इस क्रिसमस एल्बम में सांता क्लॉज इज कमिंग टू टाउन, जिंगल बेल रॉक, वंडरफुल क्रिसमस टाइम, स्लीघ राइड और लास्ट क्रिसमस जैसे लोकप्रिय गानों के नए वर्जन शामिल हैं।

सांसों की बदबू से छुटकारा पाने के लिए इन तरीकों से स्पीयरमिंट तेल का करें उपयोग



सांसों की दुर्गंध एक आम समस्या है, जिससे कई लोग परेशान रहते हैं। इस समस्या का समाधान प्राकृतिक तरीके से करना चाहते हैं तो स्पीयरमिंट तेल एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है।यह एसेंशियल ऑयल न केवल मुंह की दुर्गंध को दूर करता है, बल्कि मुंह के स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है।आइए जानते हैं कि कैसे आप स्पीयरमिंट तेल का उपयोग करके अपनी सांसों को ताजगी दे सकते हैं।

माउथवॉश के रूप में उपयोग करें

स्पीयरमिंट तेल का सबसे आसान और असरदार तरीका है कि इसे माउथवॉश के रूप में उपयोग करें।इसके लिए एक गिलास पानी में कुछ बूंदें स्पीयरमिंट तेल मिलाएं और इस मिश्रण से कुल्ला करें।यह न केवल मुंह की दुर्गंध को दूर करेगा, बल्कि बैक्टीरिया को भी खत्म करेगा, जो दुर्गंध का कारण बनते हैं। इसके नियमित उपयोग से आपके मुंह की सफाई बेहतर होगी और सांसों में ताजगी बनी रहेगी।

टूथपेस्ट में मिलाएं

आप अपने नियमित टूथपेस्ट में भी स्पीयरमिंट तेल की कुछ बूंदें मिला सकते हैं।इससे आपके दांत साफ और चमकदार रहेंगे और साथ ही आपकी सांसें भी ताजगी भरी रहेंगी।यह तरीका बहुत ही सरल और प्रभावी है, जिसे आप रोजाना अपना सकते हैं। स्पीयरमिंट तेल में मौजूद प्राकृतिक तत्व बैक्टीरिया को खत्म करने में मदद करते हैं, जिससे मुंह की दुर्गंध दूर होती है।इसके अलावा यह मसूड़ों के स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है।

चाय या पानी में मिलाएं

स्पीयरमिंट तेल का सेवन करने से भी मुंह की दुर्गंध कम होती है। इसके लिए आप अपनी चाय या पानी में इसकी कुछ बूंदें मिला सकते हैं।यह न केवल आपकी सांसों को ताजगी देगा, बल्कि आपके पाचन तंत्र के लिए भी फायदेमंद होगा। स्पीयरमिंट तेल में मौजूद प्राकृतिक तत्व पाचन को बेहतर बनाते हैं और पेट की समस्याओं से राहत दिलाते हैं।ऐसे आप अपनी सांसों को ताजगी देने के साथ-साथ अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख सकते हैं।

गरारे के लिए उपयोग करें

अगर आपको गले की समस्या हो रही हो या मुंह की दुर्गंध से परेशान हों तो गरारे करने के लिए स्पीयरमिंट तेल का इस्तेमाल कर सकते हैं।इसके लिए एक गिलास गर्म पानी में 4-5 बूंदें स्पीयरमिंट तेल मिलाएं और इस मिश्रण से गरारे करें।इससे न केवल गले की खराश कम होगी, बल्कि मुंह की दुर्गंध भी दूर होगी और सांसों में ताजगी आएगी। इसके नियमित उपयोग से गले और मुंह का स्वास्थ्य बेहतर रहेगा।

च्युइंग गम बनाएं

आप घर पर ही प्राकृतिक च्युइंग गम बना सकते हैं, जिसमें स्पीयरमिंट तेल शामिल हो।इसके लिए बेसिक सामग्री जैसे जिलेटिन या चीनी का इस्तेमाल कर सकते हैं और उसमें कुछ बूंदें स्पीयरमिंट तेल डालकर मिश्रण तैयार कर लें। इसे खाने से आपकी सांसें हमेशा ताजा रहेंगी।इस प्रकार इन सरल तरीकों से आप अपने दैनिक जीवन में स्पीयरमिंट तेल का उपयोग करके अपनी सांसों को ताजगी दे सकते हैं और मुंह के स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं।

सिरदर्द से परेशान हैं? इन 5 पेय को डाइट में करें शामिल, मिलेगा आराम



शारीरिक और मानसिक थकान के कारण सिरदर्द होना एक आम समस्या है। अगर आप सिरदर्द से राहत पाने के लिए दवाओं का सेवन नहीं करना चाहते हैं तो कुछ पेय का सेवन कर सकते हैं। ये पेय न केवल आपके शरीर को हाइड्रेट रखते हैं, बल्कि सिरदर्द को कम करने में भी मदद कर सकते हैं। आइए आज हम आपको पांच ऐसे पेय के बारे में बताते हैं, जिनका सेवन सिरदर्द से राहत दिलाने में मदद कर सकता है।

पुदीने की चाय- पुदीने की चाय का सेवन सिरदर्द के लिए एक असरदार घरेलू उपाय हो सकता है। इसमें मौजूद मेंथाल तत्व मस्तिष्क की नसों को आराम पहुंचाकर दर्द को कम कर सकता है। इसके अलावा पुदीने की चाय पीने से शरीर को ठंडक मिलती है और तनाव भी कम होता है। लाभ के लिए एक कप पानी में कुछ पत्तियां पुदीना डालकर उबालें, फिर इसे छानकर पीएं। आप इसमें शहद भी मिला सकते हैं।

नारियल पानी- नारियल पानी एक प्राकृतिक पेय है, जो शरीर को हाइड्रेट रखता है और सिरदर्द को कम करने में मदद कर सकता है। इसमें पोटेशियम और मैग्नीशियम जैसे जरूरी तत्व होते हैं, जो मस्तिष्क के तनाव को कम करते हैं। इसके अलावा नारियल पानी में प्राकृतिक मिठास होती है, जो ऊर्जा प्रदान करती है और थकान को दूर करती है। लाभ के लिए ताजा नारियल पानी का सेवन करें, जो बिना किसी मिलावट के हो।

ग्रीन टी- ग्रीन टी एंटी-आक्सीडेंट्स से भरपूर होती है, जो मस्तिष्क की नसों को आराम पहुंचाने में मदद कर सकती है। इसमें कैफीन की मात्रा कम होती है, जिससे यह सिरदर्द के लिए सुरक्षित पेय बनती है। इसके अलावा ग्रीन टी में मौजूद एक खास अमीनो एसिड तनाव को कम करने में मदद करता है। लाभ के लिए रोजाना 1-2 कप ग्रीन टी का सेवन करें, जिससे आपको सिरदर्द से राहत मिलेगी और आपका मन भी शांत रहेगा।

अदरक की चाय- अदरक की चाय में मौजूद सूजन कम करने वाले गुण सिरदर्द को कम करने में मदद कर सकते हैं। अदरक में मौजूद खास तत्व रक्त संचार को बेहतर बनाते हैं, जिससे दर्द कम होता है। इसके अलावा अदरक की चाय पीने से शरीर का तापमान संतुलित रहता है और थकान दूर होती है। लाभ के लिए एक कप पानी में कुछ टुकड़े अदरक डालकर उबालें, फिर इसे छानकर पीएं। आप इसमें शहद भी मिला सकते हैं।

कैमोमाइल चाय- कैमोमाइल चाय एक हर्बल पेय है, जो नींद लाने में मदद करती है और तनाव कम करती है, जिससे सिरदर्द भी ठीक होता है। कैमोमाइल में सूजन कम करने वाले गुण होते हैं, जो सूजन कम करके दर्द से राहत दिलाते हैं। लाभ के लिए एक कप पानी में कुछ सूखे कैमोमाइल के फूल डालकर उबालें, फिर इसे छानकर पीएं। आप इसमें शहद भी मिला सकते हैं, जिससे इसका स्वाद बेहतर होगा और यह और भी फायदेमंद होगी।

लंबे समय तक बैठने से होने वाली समस्याओं में कारगर है ऊर्ध्वमुख पश्चिमोत्तानासन



लंबे समय तक बैठे रहने, कंधा जकड़े रहने और पैरों में खिंचाव आम हो गया है। ऐसे में योग सिर्फ शरीर को मोडने़ का नाम नहीं है, बल्कि खुद से जुडने़ का एक जरिया है। ऐसे ही योग पद्धति में ऊर्ध्वमुख पश्चिमोत्तानासन सबसे शरीर की जकडऩ खोलने, पाचन तंत्र को बेहतर बनाने समेत कई शारीरिक स्वास्थ संबंधित समस्याओं का समाधान है। ऊर्ध्वमुख पश्चिमोत्तानासन तीन शब्दों से मिलकर बना है, ऊर्ध्व मुख का अर्थ है ऊपर की तरफ चेहरा, पश्चिम का अर्थ होता है शरीर का पिछला हिस्सा, उत्तान का अर्थ होता है, गहरा खिंचाव और आसन की अर्थ मुद्रा। इस आसन को अंग्रेजी में अपवर्ड फेसिंग इंटेंस वेस्ट स्ट्रेच कहते हैं। इस आसन में आप उभय पादांगुष्ठासन की तरह पैर के अंगूठों को पकड़कर बैलेंस बनाते हैं और साथ ही धड़ को आगे की तरफ पैरों की ओर झुकाते हैं। यह आसन अष्टांग योग की प्राथमिक शृंखला में आता है और उभय पादांगुष्ठासन के बाद का अगला लेवल माना जाता है।

योग परंपरा में ऊर्ध्वमुख पश्चिमोत्तानासन एक उन्नत आसन है, जो पश्चिमोत्तानासन और संतुलन का मिला-जुला रूप है। भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने भी इस आसन को लेकर प्रतिक्रिया दी। उनके अनुसार, ऊर्ध्व मुख पश्चिमोत्तानासन एक उन्नत योगासन है, जिसमें शरीर का संतुलन कूल्हों (सिट बोन्स) पर रखा जाता है और दोनों पैरों को ऊपर आकाश की ओर सीधा खींचकर हाथों से पंजों को पकड़ा जाता है। यह अभ्यास कोर शक्ति, रीढ़ के लचीलेपन और संतुलन को सुधारता है। यह एक ऐसा योग आसन है जिसमें बैठकर पैर सीधे रखते हुए आगे झुकते हैं और अंगूठे पकड़कर रीढ़ और पैरों के पिछले हिस्से को गहराई से स्ट्रेच करते हैं। इस आसन के नियमित अभ्यास करने से हैमस्ट्रिंग यानी जांघ के पीछे की मांसपेशियां, पैसिव तरीके से लंबी और लचीली होती हैं। यह एकमात्र ऐसा योग आसन है जो शरीर के पीछे वाले हिस्से का लचीलापन और आगे वाले हिस्से की ताकत दोनों को एक साथ बढ़ाता है, ताकि वह लचीलापन सिर्फ बैठे-बैठे न रहे, बल्कि काम करते समय भी टिके रहे।

क्या बाथ टॉवल बदलने का समय आ गया है?

बाथ टॉवल का इस्तेमाल करने से त्वचा को सुखाने में मदद मिलती है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि बाथ टॉवल को कितने समय तक इस्तेमाल किया जा सकता है? दरअसल, बाथ टॉवल को लंबे समय तक इस्तेमाल करने से उसमें कीटाणु पनपने लगते हैं, जो त्वचा के लिए नुकसानदायक हो सकते हैं। आइए आज हम आपको 5 ऐसे संकेतों के बारे में बताते हैं, जो यह बताते हैं कि आपको अपना बाथ टॉवल बदल लेना चाहिए।

गंध आना- अगर आपके बाथ टॉवल में अजीब गंध आने लगे तो उसे तुरंत बदल दें। गीला बाथ टॉवल एक ऐसी जगह होती है, जहां कीटाणु तेजी से बढ़ते हैं, जो त्वचा पर संक्रमण का कारण बन सकते हैं।

इसलिए अगर आपके बाथ टॉवल में अजीब गंध आने लगे तो उसे तुरंत बदल दें।

इसके अलावा इस्तेमाल किए हुए बाथ टॉवल को हमेशा खुली जगह पर सुखाएं ताकि उसमें मौजूद नमी दूर हो जाएं और कीटाणु न पनप सकें।

अगर बाथ टॉवल बहुत पतला हो गया हो तो उसे बदलें

अगर आपका बाथ टॉवल बहुत पतला हो गया है तो उसे बदलें। कई बार धोने के बाद बाथ टॉवल का कपड़ा ढीला और पतला हो जाता है, जिससे वह अपनी नमी को अच्छे से सोख नहीं पाता है।

ऐसे बाथ टॉवल से त्वचा पर खरोंच भी आ सकती है, इसलिए अगर आपका बाथ टॉवल बहुत पतला हो गया हो तो उसे बदल लें।

दाग-धब्बे दिखाई दें तो बदलें बाथ टॉवल

अगर आपके बाथ टॉवल पर दाग-धब्बे दिखाई देने लगे तो उसे बदल लें। बाथटॉवल पर साबुन या शैंपू के दाग लगते हैं, जिन्हें धोने से साफ नहीं किया जा सकता है।

अगर आपके बाथ टॉवल पर पसीने या गंदगी के दाग लगे हैं तो उसे भी बदल लें। इन दागों को साफ करने में काफी समय लग सकता है।

ज्यादा इस्तेमाल के बाद भी नहीं दिख रहा है बदलाव

अगर आप अपने बाथ टॉवल का इस्तेमाल ज्यादा करते हैं और फिर भी उसमें कोई बदलाव नहीं आ रहा है तो उसे बदल लें।

आमतौर पर इस्तेमाल के बाद बाथ टॉवल थोड़ा मुलायम और ज्यादा सोखने वाला हो जाता है। अगर ऐसा नहीं हो रहा है तो इसका मतलब है कि वह पुराना हो गया है।

इसके अलावा अगर बाथ टॉवल ज्यादा गीला रह रहा है तो उसे बदल लें।

मुख्यमंत्री ने देहरादून में 'रन फॉर यूनिटी' कार्यक्रम में किया प्रतिभाग

देहरादून । मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को पवेलियन ग्राउंड, देहरादून में राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर आयोजित 'रन फॉर यूनिटी' कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। मुख्यमंत्री ने दौड़ में शामिल युवाओं को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और उनका उत्साहवर्धन करते हुए राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता का संदेश दिया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने युवाओं, खिलाड़ियों एवं प्रांतीय रक्षक दल (पीआरडी) के जवानों के हित में कई महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं।

मुख्यमंत्री ने प्रांतीय रक्षक दल (पीआरडी) के जवानों के मानदेय में वृद्धि किए जाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि मानदेय वृद्धि के संबंध में जल्द ही बैठक आयोजित की जाएगी। मुख्यमंत्री ने प्रदेश की प्रत्येक ग्राम पंचायत में मुख्यमंत्री खेल क्लब का गठन किए जाने की भी घोषणा की। उन्होंने कहा कि इससे ग्रामीण क्षेत्रों में खेल गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय प्रतिभाओं को आगे बढ़ने के बेहतर अवसर प्राप्त होंगे।

मुख्यमंत्री ने देहरादून के आमवाला स्थित युवा केंद्र से सटी रिक्त भूमि को युवा कल्याण विभाग के नाम हस्तांतरित किए जाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि इस भूमि पर मिनी स्टेडियम एवं अग्निवीर प्रशिक्षण केंद्र का निर्माण किया जाएगा। इससे युवाओं को खेल सुविधाओं के साथ ही सेना में भर्ती की तैयारी के लिए बेहतर प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी।



मुख्यमंत्री ने मुख्यमंत्री चैंपियनशिप ट्रॉफी के अंतर्गत विभिन्न स्तरों पर आयोजित खेल प्रतियोगिताओं के विजेता खिलाड़ियों की पुरस्कार राशि बढ़ाए जाने की भी घोषणा की। इसके तहत न्याय पंचायत स्तर पर प्रथम पुरस्कार 300 से बढ़ाकर 400, द्वितीय पुरस्कार 200 से बढ़ाकर 300 तथा तृतीय पुरस्कार 150 से बढ़ाकर 200 किया जाएगा। विधानसभा स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार की राशि क्रमशः 500, 400 एवं 300 से बढ़ाकर 700, 500 एवं 400 की जाएगी।

इसी प्रकार संसदीय क्षेत्र स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार की राशि क्रमशः 800, 600 एवं 400 से बढ़ाकर 1,000, 800 एवं 600 तथा राज्य स्तर पर 1,500, 1,000 एवं 700 से बढ़ाकर क्रमशः 2,000, 1,500 एवं 1,000 किए जाने की घोषणा की गई। मुख्यमंत्री ने मुख्यमंत्री चैंपियनशिप ट्रॉफी के अंतर्गत ओवरऑल विजेता जनपद को दिए जाने वाले मुख्यमंत्री कप की पुरस्कार राशि 5 लाख से बढ़ाकर 10 लाख किए जाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि वर्तमान में मुख्यमंत्री चैंपियनशिप ट्रॉफी के अंतर्गत 32 खेल आयोजित किए जाते हैं, जिनकी संख्या बढ़ाकर 50 की जाएगी। इनमें विशेष रूप से पारंपरिक खेलों को शामिल किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने चैंपियनशिप ट्रॉफी के आयोजन के लिए निर्धारित कुल धनराशि में भी वृद्धि किए जाने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर उन्हें नमन करते हुए प्रदेशवासियों को राष्ट्रीय एकता दिवस की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, दूरदर्शिता और नेतृत्व क्षमता से देश की एकता एवं अखंडता को मजबूत आधार प्रदान किया। उन्होंने विभिन्न रियासतों का एकीकरण कर सशक्त और एकजुट भारत के निर्माण में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सबसे पहली पहचान भारतीय होने की है। यही भावना हमें आपसी मतभेदों से ऊपर उठकर देश की एकता, अखंडता और विकास के लिए मिलकर कार्य करने की प्रेरणा देती है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2014 से सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री की प्रेरणा से सरदार पटेल के योगदान को चिरस्थायी बनाने के लिए गुजरात में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का निर्माण किया गया है। उन्होंने कहा कि 'रन फॉर यूनिटी' जैसे आयोजन सरदार पटेल के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने और राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश विकसित भारत के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने युवाओं से अनुशासन, परिश्रम और दृढ़ संकल्प के साथ जीवन में आगे बढ़ने का आह्वान किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि युवा शक्ति ही देश और प्रदेश के उज्ज्वल भविष्य का आधार है। उन्होंने युवाओं से खेल, योग और नियमित शारीरिक गतिविधियों को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने तथा नशे से दूर रहने की अपील की। मुख्यमंत्री ने युवाओं से नशामुक्त उत्तराखंड के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाने और नशे के विरुद्ध जनजागरूकता बढ़ाने का भी आह्वान किया।

मुख्यमंत्री ने जोशीमठ हेलीकॉप्टर हादसे पर जताया दुःख

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बदरीनाथ धाम से लौटते समय जोशीमठ क्षेत्र में हुए हेलीकॉप्टर हादसे पर गहरा दुःख व्यक्त किया। उन्होंने हादसे में दिवंगत हुए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक संतप्त परिजनों के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं। मुख्यमंत्री ने भगवान बदरी विशाल से दिवंगत आत्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान देने तथा शोकाकुल परिजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी एवं खजान दास, राज्यसभा सांसद नरेश बंसल, देहरादून के महापौर सौरभ थपलियाल, विधायक बृजभूषण गैरोला, उत्तराखंड राज्य स्तरीय खेल परिषद के अध्यक्ष कुलदीप बुटोला, उपाध्यक्ष हेमराज बिष्ट, विशेष प्रमुख सचिव अमित सिन्हा, निदेशक खेल दीप्ति सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं बड़ी संख्या में युवा उपस्थित थे।

फैक्ट्री में लगी भीषण आग, घंटों की मशक्कत के बाद फायर ब्रिगेड ने पाया काबू

हरिद्वार । जिले के भगवानपुर क्षेत्र स्थित लकेश्वरी औद्योगिक क्षेत्र में बजाज एंड संस प्राइवेट लिमिटेड की फैक्ट्री में अचानक भीषण आग लग गयी। फैक्ट्री के भीतर हीट ट्रीटमेंट प्रक्रिया में इस्तेमाल होने वाले क्वेंचिंग ऑयल में आग लगने की सूचना मिलते ही दमकल विभाग की टीम तत्काल हरकत में आ गई और मौके पर पहुंची। इसके बाद दमकल कर्मियों ने सूझबूझ और तत्परता के साथ फोम कंपाउंड का इस्तेमाल कर आग पर पूरी तरह काबू पा लिया। जिसके बाद राहत की सांस ली गई। मिली जानकारी के मुताबिक, भगवानपुर के लकेश्वरी औद्योगिक क्षेत्र में स्थित बजाज एंड संस प्राइवेट लिमिटेड की फैक्ट्री में आग लग गई। वहीं फैक्ट्री में अचानक लगी आग की घटना से कर्मचारियों में अफरा-तफरी का माहौल हो गया। कुछ ही देर में आग की लपटें आसमान छूने लगी। इसी बीच फैक्ट्री के एक कर्मचारी ने भगवानपुर फायर स्टेशन को आग लगने की सूचना दी। कर्मचारी ने बताया कि फैक्ट्री परिसर में आग लग गई है और उसे बुझाने के लिए तत्काल अग्निशमन वाहन की आवश्यकता है। सूचना मिलते ही फायर स्टेशन पर तैनात अग्निशमन दल वाहन के साथ घटनास्थल के लिए रवाना हो गया। फैक्ट्री पहुंचने पर दमकल कर्मियों ने देखा कि हीट ट्रीटमेंट प्रक्रिया के दौरान इस्तेमाल किए जाने वाले क्वेंचिंग ऑयल ने आग पकड़ ली थी। वहीं तेल में लगी आग को देखते हुए अग्निशमन दल ने स्थिति की गंभीरता को समझते हुए सावधानीपूर्वक कार्रवाई शुरू की। टीम ने मोटर फायर इंजन से होज पाइप फैलाकर आग बुझाने का अभियान शुरू किया। इसी के साथ आग पर प्रभावी नियंत्रण पाने के लिए पानी के बजाय फोम कंपाउंड का इस्तेमाल किया गया। दमकल कर्मियों ने समन्वय के साथ काम करते हुए कड़ी मशक्कत के बाद आग को पूरी तरह बुझा दिया। वहीं, समय रहते की गई कार्रवाई से आग को नियंत्रित करने में सफलता मिली और संभावित खतरे को टालने में मदद मिली। गनीमत रही इस घटना में कोई जनहानि नहीं हुई। आग बुझाने की कार्रवाई पूरी होने और स्थिति सामान्य होने के बाद अग्निशमन दल वापस भगवानपुर फायर स्टेशन पहुंच गया।

खाद्य पदार्थ खरीदने से पहले जांचें गुणवत्ता, पैकिंग और एक्सपायरी डेट

हरिद्वार । त्योहारों में मिलावटी खाद्य पदार्थों की आशंका के बीच खाद्य सुरक्षा विभाग ने उपभोक्ताओं से खरीदारी में सतर्कता बरतने की अपील की है। वहीं, मिलावट के मामलों में कार्रवाई के बावजूद पिछले करीब एक साल में सजा सुनाए जाने के दो ही मामले सामने आए हैं। दोनों मामले पनीर बनाने वाली इकाइयों से जुड़े हैं। सीजेएम कोर्ट ने इनके संचालकों को छह-छह माह की कैद और 10-10 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है। जिला खाद्य सुरक्षा अधिकारी महिमानंद जोशी ने बताया कि तीन अक्टूबर को नन्हेड़ा अनंतपुर स्थित इकाई पर छापेमारी की गई थी। वहां दो कुंतल अधबना पनीर, 20 किलो पामोलिन तेल और 30 किलो स्किम्ड मिल्क पाउडर मिला था। विभाग ने अधबना पनीर और पाम ऑयल नष्ट करा दिया था। वहीं, 13 अक्तूबर को लक्सर के संघीपुर गढ़ी स्थित इकाई में करीब तीन कुंतल तैयार पनीर और छह कुंतल अधनिर्मित पनीर मिला था। मौके पर पाम ऑयल के टिन और स्किम्ड मिल्क पाउडर के खाली बोरे भी बरामद हुए थे। विभाग ने करीब 10 कुंतल खाद्य पदार्थ नष्ट कराकर इकाई बंद करा दी थी। खाद्य अनुज्ञप्ति भी निलंबित कर दी गई थी। अधिकारी के अनुसार, दोनों मामलों में न्यायालय संचालकों को सजा सुना चुका है।

पैकिंग और तिथि देखकर खरीदें खाद्य पदार्थ

खाद्य पदार्थ खरीदते समय उपभोक्ताओं को पैकेट पर निर्माता का नाम-पता, सामग्री की सूची, निर्माण या पैकिंग तिथि, समाप्ति तिथि और भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) का अनुज्ञप्ति नंबर जांचना चाहिए। पैकिंग फटी हो या जरूरी जानकारी स्पष्ट न हो तो उत्पाद खरीदने से बचें। केवल रंग, गंध, स्वाद या बनावट के आधार पर किसी खाद्य पदार्थ को शुद्ध अथवा मिलावटी नहीं माना जा सकता। खुले में बिकने वाली मिठाइयों, मावा और पनीर की खरीदारी में साफ-सफाई और भंडारण की स्थिति पर भी ध्यान देना जरूरी है।

सरकार ने अनुपूरक बजट में हर वर्ग के कल्याण पर फोकस किया: महाराज



देहरादून । प्रदेश के कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज ने कहा है कि भराड़ीसैंण विधानसभा में वित्त वर्ष 2026-27 के लिए 7,844.18 करोड़ रुपये का अनुपूरक बजट पारित होना उत्तराखंड के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। अनुपूरक बजट में सरकार ने हर वर्ग के कल्याण पर फोकस किया है। दूरदर्शी और जन-कल्याणकारी बजट के लिए उन्होंने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को बधाई दी है। कैबिनेट मंत्री श्री महाराज ने कहा है कि इस अनुपूरक बजट के बाद राज्य का कुल वार्षिक बजट 1,11,703.21 करोड़ से बढ़कर 1,19,547.39 करोड़ रुपये हो गया है, जो राज्य सरकार की विकास के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह बजट केवल आंकड़ों का नहीं, बल्कि हमारी प्राथमिकताओं का बजट है। इसमें से 4,164.32 करोड़ रुपये पूंजीगत व्यय के लिए रखना यह सिद्ध करता है कि सरकार केवल वर्तमान नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए उत्तराखंड का निर्माण कर रही है। साथ ही 3,679.86 करोड़ रुपये का राजस्व व्यय प्रशासनिक और जन-सेवाओं को और अधिक सुदृढ़ करेगा। हमारे अन्नदाता किसानों की उपज की खरीद और संबंधित योजनाओं के लिए 1,244 करोड़ रुपये का प्रावधान किसान हितैषी सरकार का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि शिक्षा और खेल गतिविधियों के लिए 278 करोड़ रुपये से हमारे युवाओं का भविष्य उज्ज्वल होगा और महिलाओं के पोषण और कल्याण के लिए 117 करोड़ रुपये मातृशक्ति के सम्मान का प्रतीक है। अटल आयुष्मान योजना के लिए 100 करोड़ और हमारे कर्मठ राज्य कर्मचारियों की गोल्डन कार्ड योजना के लिए 125 करोड़, कुल 225 करोड़ रुपये का प्रावधान स्वास्थ्य सुरक्षा के क्षेत्र में सरकार की संवेदनशीलता को दर्शाता है।

स्वामी,मुद्रक व प्रकाशक अवनीश कुमार द्वारा भगवती प्रिंटर्स,इण्डस्ट्रियल एरिया, हरिद्वार से छपवाकर ग्रा. बसवाखेड़ी पो. मंगलौर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।

सम्पादकः अवनीश कुमार, मो० 9410553400

ई-मेलः liveskgnews@gmail.com

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरिद्वार न्यायालय में ही होगा)

सभी लेखों में सम्पादक की सहमति जरूरी नही है।